पात्र

रविदास	...	एक मोची
गंगो	...	रविदास की पत्नी
राजू	...	रविदास का पुत्र
सोनिया	...	रविदास की गोद ली हुई बेटी
मस्तराम	...	एक दलित युवक
सुखलाल	...	सूदखोर मोची
लट्टूआराम	...	एक हरिजन युवक
नलिनी	...	एक ब्राह्मण युवती
प्रेमस्वरूप शास्त्री	...	नलिनी के चाचा (रिटायर्ड जज)
पुलिस इन्स्पेक्टर	...	
हीरानंद	...	दकियानूसी नेता

तथा

आवश्यकतानुसार कुछ लोग

प्रथम अंक

समय—प्रातःकाल ।

स्थान—रविदास चमार के घर का आंगन ।

दृश्य—[मंच के बाईं ओर का दरवाजा आंगन के अन्दर आने का है। दाईं ओर खुले चबूतरे पर घर की रसोई है जिसमें से भीतर के एक ओर कोठे का दरवाजा है। पीछे की दीवार के बाँयें कोने में एक ओर दरवाजा है जो पिछली गली में निकल जाता है। बीच में छप्पर के नीचे रविदास के काम करने का स्थान है। जहाँ पर मोची के काम के तमाम औजार मशीन इत्यादि रखे हैं।

विशेष विवरण के लिये साथ में रंगमंच का चित्र प्रस्तुत है।

परदा खुलने पर मंच पर पौ फटने का दृश्य उपस्थित होता है। दूर किसी मंदिर से आरती की शंख और घड़ियाल मिश्रित ध्वनि सुनाई देती है। थोड़ी देर बाद होली के स्वांग वालों का ढोल आदि के साथ शोर सुनाई देता है। रविदास की गोद ली हुई बेटी सोनिया का घर के भीतर प्रवेश। उम्र लगभग १७ वर्ष है। उनींदी-सी झाड़ू लगाना आरम्भ करती है।]

गंगो—(भीतर से) सोनिया !

सोनिया—कहो, बुआ ।

गंगो—दिन निकल आया है क्या ?

सोनिया—अभी तो पौ फटी है। मैं झाड़ू लगा रही हूँ आंगन में।

गंगो—तेरे काका घर नहीं आए अभी ?

सोनिया—आते हो होंगे। जाते हुए कह गए थे, मन्दिर से लौटकर पंचायतघर जाऊंगा।

गंगो—क्यों ?

सोनिया—उनके नाम की कोई चिट्ठी आई धरी है।

गंगो—चिट्ठी ! किसकी चिट्ठी आई है ?

सोनिया—यह तो पढ़ने से ही पता चलेगा। तू थोड़ी देर और सो ले बुआ। रात भर नींद नहीं आई तुझे।

गंगो—अब तो आँख लगी थी। ढोल-ढमक्कों की आवाज ने जगा दिया। मैंने सोचा उठकर थोड़ा काम ही कर लूं। यह शोर काहे का हो रहा सवेरे-सवेरे ?

सोनिया—आज होली है न ! उसी का स्वांग बना रहे हैं।

गंगो—अरे हाँ, मैं तो भूल ही गई थी। आज के दिन मेरे राजू का जन्म हुआ था। हर साल वाल्मीकी जी के मंदिर में प्रसाद चढ़ाया करती हूँ। आज पूरे चौबीस बरस का हो गया है।

सोनिया—मुझे तो याद था बुआ। अभी याद कराने ही वाली थी।

गंगो—देख कैसी वक्त की बात है। अभी-अभी सपने में आकर बातें कर रहा था मुझसे।

सोनिया—क्या कह रहे थे ?

गंगो—मैंने तो पहले पहचाना ही नहीं उसे।

सोनिया—क्यों ?

गंगो—रंग्रेजी (अंग्रेज़ी) कोट, पतलून पहन रखा था उसने और सिर पर चढ़ा रखा था—वोह—वोह विलायती टोपा-सा। मैं तो डर के मारे सहम-सी गई।

सोनिया—इसमें भला डरने की क्या बात थी ?

गंगो—मैं समझी कोई कमेटी का साहब चालान करने आया है।

सोनिया—फिर पहचाना कैसे तुमने ?

गंगो—वह ख़ुद ही ज़ोर से हँस पड़ा और बोला—मैं राजू हूँ अम्मा ! पहचाना नहीं मुझे ?

सोनिया—फिर तो डर भाग गया होगा ?

गंगो—हाँ—तब तो ऐसा लगा जैसे कि मैं बहुत बड़ी हो गई हूँ। पीपल के पेड़ से भी बड़ी। मेरा बेटा साहब हो गया है। वह मेरे पाँव छू रहा था और मेरे पाँव ! मेरे पाँव आकाश को छू रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे कि मैं हवा में डोल रही हूँ।

सोनिया—लेकिन बातें क्या-क्या हुई आपस में ?

गंगो—मैंने कहा, राजू तू साहब हो गया है और मैं अंधी। कहीं ऐसा न हो कि तेरी बहू आने से पहले ही मेरा राम-नाम सत्त हो जाए, सो जल्दी से शादी कर ले। (थोड़ा रुककर) अरे अबके कुछ बोली नहीं तू। क्यों शादी के नाम से शर्मा रही है क्या ? कहाँ हैं तेरे हाथ ? इधर ला, मैं तो इन हाथों में लाल चूड़ें की खनक सुनने के लिए जी रही हूँ। मैंने साफ-साफ कह दिया—देख राजू ! तू कुछ भी बन जाए, मेरी बहू तो सोनिया ही बनेगी। मरते हुए

इसके मां-बाप मुझे सौंप गए थे, और मैं मरने से पहले तुझे सौंप जाऊँगी। पहले तो हँस दिया फिर बात बदलकर बोला, "बड़े जोर की प्यास लगी है अम्मा !"

सोनिया—(भागकर) मैं ले आती हूँ पानी बूआ।

गंगो—पानी, अरी बावरी, वह तो सपने में माँग रहा था, तू लेने ही चल दी।

सोनिया—अब मैं नल पे जा रही हूँ बुआ, फिर स्कूल जाना है मुझे।

गंगो—क्यो, आज होली की छुट्टी नहीं हुई ?

सोनिया—छुट्टी तो है, लेकिन मिठाई बटेगी स्कूल के बच्चों में।

गंगो—अच्छा, तो फिर काम निबटा ले जल्दी से। बर्तन मैं साफ किए देती हूँ; राख कहाँ धरी है ?

सोनिया—डिब्बे में पड़ी है और बर्तन भी पास ही धरे हैं।

[गंगो को बर्तनों के नजदीक छोड़, गागर और बाल्टी उठकर जाने लगती है।]

गंगो—सोनिया ?

सोनिया—कहो बुआ।

गंगो—सवेरे-सवेरे आने वाले सपने सच्चे होते हैं न !

सोनिया—कहते तो ऐसा ही हैं।

गंगो—फिर तो मेरा बेटा जरूर साहब हो गया होगा।

सोनिया—पढ़ाई कोई कम तो नहीं की उन्होंने।

गंगो—कोट-पतलून तो पहनता ही होगा।

सोनिया—कानून की पढ़ाई करते थे, तो धोती-कुर्ता पहनते थे। अब तो उन्हें देखे भी एक साल हो गया है।

गंगो—पढ़ते हुए तो तू भी घाघरा पहनती थी आठ पास करके पढ़ाने लगी तो साड़ी बांध ली।

सोनिया—यह साड़ी घाघरे से अच्छी होती है न बूआ।

गंगो—क्यों नहीं, साड़ी तो रूपवती बना देती है।

सोनिया—मैं जा रही हूँ बूआ।

गंगो—अरी बर्तन उठाकर भागा मत कर, कहीं ठोकर न लग जाय।

[सोनिया का पीछे के दरवाजे से प्रस्थान। दूर से फिर स्वांग बालों का शोर सुनाई देता है। बाएं हाथ के दरवाज़े से रविदास का प्रवेश, उम्र लगभग पचास वर्ष।]

रविदास—गंगो ! ओ गंगो ! बहुत-बहुत बधाई हो तुझे। चिट्ठी आई है।

गंगो—चिट्ठी ! किसकी चिट्ठी आई है ?

रविदास—अपने राजू की, आज घर आ रहा है।

गंगो—सच; मेरा बेटा घर आ रहा है ?

रविदास—हाँ, और साहब बहादुर बनकर। कचहरी का मजिस्ट्रेट हो गया है मेरा यार।

गंगो—और क्या-क्या लिखा है चिट्ठी में ?

रविदास—अभी पढ़के सुनाता हूँ सारी चिट्ठी। (पढ़ते हुए) लिखा है—पूज्य पिताजी, प्रणाम ! अपने शहर में आए हुए सात रोज़ हो गए हैं।

गंगो—सात रोज़ !

रविदास—ज़रूरी कामों के कारण घर नहीं आ सका। एक

मित्र के घर ठहर गया हूँ, कल बरोज मंगलवार, मतलब हुआ आज के दिन घर आ रहा हूँ। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मुझे मजिस्ट्रेट का ओहदा मिल गया है।

गंगो—ऐसे भी कौन से काम हैं, जो शहर में आकर भी घर नहीं आया।

रविदास—कोई सरकारी काम होंगे, मेल-जोल कर रहा होगा बड़े-बड़े आदमियों से। आगे लिखा है, आपके आशीर्वाद से इम्तिहान में अव्वल आया हूँ। सो सरकारी नौकरी मिल गई है।

गंगो—अच्छा, फिर तो सरकार के घर से बंधी-बंधाई रोजी मिल जाया करेगी।

रविदास—और नहीं तो क्या, अब तो चुटकियों में उतर जायगा सारा कर्ज़ा, और फिर से अपना हो जायगा यह घर-बार।

गंगो—लेकिन रकम कितनी मिलेगी ? बीस-बीस की पाँच ढेरियाँ तो हो जायेंगी एक महीने में ?

रविदास—पाँच ढेरियाँ ! अरी कम-से-कम बीस ढेरियाँ। तेरा बेटा कचहरी का हाकिम बना है, मुंशी नहीं।

गंगो—कचहरी का हाकिम, वो कमेटी के साहब से भी बड़ा होता हैं क्या ?

रविदास—कमेटी वाले। हूँ, कमेटी वाले तो उसके सामने पानी भरते हैं। मजिस्ट्रेट तो बहुत बड़ी बला होती है गंगो। आदमी को खड़े-खड़े बन्द करने का हुक्म सुना दे। एक साल, दो साल, तीन साल और जी में आए तो बन्धे-

बंधाए को छोड़ दे।

गंगो—अच्छा। फिर तो मेरा बेटा बहुत बड़ा (असफर) हो गया।

[गंगो उठकर तुलसी को प्रणाम करती है···]

रविदास—हाँ।

गंगो—(रूंधे हुए गले से) घर आए तो कालख लगा देना माथे पर, कहीं नज़र न लग जाए मेरे लाल को।

रविदास—और यह देख ! अपना फोटो भी भेजा है साथ में, बड़ी मुश्किल से आता है पहचान में।

[रविदास फोटो गंगो को थमा देता है···]

गंगो—कोट-पतलून तो पहन रखा है ना ?

रविदास—हाँ, और गले में गुलुबन्द भी बांध रखा है, और ऊपर पहन रखा है एक काला झोला-सा। कितना तेज़ है इसकी सूरत में।

[गंगो तस्वीर को अपने सीने से लगा लेती है···]

रविदास—अब वह घर आ रहा है गंगो, तो तेरी आंखों का इलाज हो जाएगा। फिर से जोत आ जाएगी तेरी इन आंखों में।

गंगो—मेरा-राजू आ गया मेरी आंखों की जोत आ गई। आखिर मेरा सपना सच्चा निकला न।

रविदास—तो क्या,तुझे सपने में मिलने आया था ?

गंगो—हाँ, आज ही, और अभी-अभी छपी बात सुना रही थी मैं सोनिया को।

रविदास—सो देख ले, अब यह सब कुछ सपना सा दिखाई दे

रहा है । राजू की पढ़ाई, सरकार का वज़ीफा, सुखलाल का कर्ज यह सब सपना ही तो था । सोलह साल बीत गए लेकिन ऐसा मालूम होता है जैसे, जैसे; कल ही की बात है । यहीं आगन में कुदकड़े मारता फिरता था । हुक्का भर के लाता,-तो मैं ताड़ देता, "पढ़ा-लिखा कर सुसरे नहीं तो सारी उम्र जूतियाँ गांठता रहेगा ।" और वह खट से जवाब देता, "मैं तो हाकिम बनूंगा, जेल करवा दूंगा चोरों को ।"

गंगो—और आज हाकिम बन के दिखा दिया न । मैं न कहती थी सुखलाल के कर्जे से जी भारी न करो । बेटा पढ़-लिख गया, तो सारा कर्ज़ उतर जाएगा । औलाद नेक होनी चाहिए ।

रविदास—औलाद, औलाद तो मां-बाप के लिए किसान की फसल होती है गंगो ! बोने के बाद कितने दुःख झेलने पड़ते हैं और काटने के वक्त बात फिर तकदीर के हाथ होती है । क्या खबर······

[सोनिया का हाथ में बाल्टी और सिर पर पानी के दो घड़े उठाए हुए प्रवेश···]

सोनिया—किसकी चिट्ठी आई है काका ।

रविदास—अपने राजू की, आज घर आ रहा है ।

सोनिया—सच ।

गंगो—हाँ, और सचमुच का साहब बहादुर बनकर ।

सोनिया—कौन-सा ओहदा मिल गया काका ।

रविदास—पूछ अपनी बुआ से ।

गंगो—कचहरी में, मेट हो गया है।

रविदास—धत् तेरे की, मेट नहीं मजिस्ट्रेट।

सोनिया—मजिस्ट्रेट ?

रविदास—दर्जा अव्वल।

सोनिया—तुम्हें बहुत-बहुत बधाई हो काका।

रविदास—अरी बधाई बाद में देना पहले बर्तन तो उतार ले सर से।

सोनिया—ओह—हाँ।

गंगो—यह सब प्रताप तो सोनिया के पैरों का है, जब से घर में आई है तकदीर जाग उठी है हम लोगों की।

सोनिया—बिरादरी के सब लोगों को खबर हो गई है क्या ?

रविदास—उसे घर आने दे। सबको पता चल जाएगा चढ़े सूरज का उजाला छुपा नहीं करता किसी से जरा, हुक्का ले आ मेरा।

सोनिया—अभी लो (सोनिया का अन्दर की ओर प्रस्थान···)

गंगो—अब बढ़-चढ़कर बातें न बनाना लोगों से, बेकार की जलन रखते हैं अन्दर ही अन्दर।

रविदास—जलते हैं तो जला करें। हमने भी तो कई साल जल-जलकर काटे हैं। तू ही बता जब से कर्ज़ा चढ़ा है सिर पर, दो वक्त की रोटी भी मिली है आराम से !

गंगो—तो क्या हुआ थोड़ा खाने से मर तो नहीं गए।

रविदास—फिर लोगों को जलन क्यों। दस साल मैंने मशीन के साथ मशीन होकर काम किया है। और काम करते-करते तेरी आंखे ही जाती रहीं।

गंगो—लेकिन मेहनत तो अकारथ तो नहीं गई, उसका फल तो मिल ही गया।

[सोनिया का हुक्का लिए हुए प्रवेश···]

सोनिया—अब तुम्हारा सुख लेने का वक्त आ गया है बुआ, हिंडोले में बैठकर राज किया करोगी।

गंगो—मेरा बेटा राज करे मेरे लिए इतना ही बहुत है।

[सोनिम गंगो को सहारा देकर अन्दग ले जाती है···]

रविदास—सोनिया ! यह राजू की फोटो भी लेती जा।

सोनिया—कहां है ?

रविदास—यह रही, इसे संभालकर रख ले। शीशा चढ़वाएंगे इस पर। देखा, अपने धरम इमान से कहियो, कोई कह सकता है यह मेरे जैसे चमार का बेटा होगा।

गंगो—(अन्दर से) अब मुझे तो गाली न दो बुढ़ापे में।

रविदास—अरी,,गाली नहीं दे रहा, अपना रुतबा बढ़ा रहा हूँ, बाप हो गया हूँ मजिस्ट्रेट का।

[सोनिया और गंगो का अन्दर को प्रस्थान, रविदास दो-चार कश मारकर अपना काम शुरू कर देता है···]

रविदास—तेरा लाख-लाख शुक्र है दाता ! किसी ने सच कहा है 'तेरे घर देर है अन्धेर नहीं······।

[सोनिया का प्रवेश······]

सोनिया—काका !

रविदास—हूं।

सोनिया—आज तो काम का नागा न कर दो।

रविदास—क्यों ?

सोनिया—एक त्यौहार का दिन है।

रविदास—और दूसरा ?

सोनिया—वह घर आ रहे हैं।

रविदास—अरी आज ही तो काम करने का दिन है, मेरे अंग-अंग में बिजली की-सी शक्ति आ गई है, अब महीनों का काम दिनों में घसीट दूंगा यों···।

सोनिया—मेरा कहा मानो तो यह काम बिल्कुल ही छोड़ दो।

रविदास—अरे, यह क्या विचार आ गया तेरे मन में मैजिस्ट्रेट की इज्जत में कमी न आ जाए, अरी बावरी ! कर्ज़ा कौन उतारेगा सुखलाल का। आज तक तो सूद ही खून चूसे जा रहा है, असल की वारी तो अब आई है।

सोनिया—यह बात नहीं काका ! मैं तो तुम्हारे आराम की सोच रही थी और कर्ज़े की रकम, तो वह धीरे-धीरे खुद ही चुका देंगे।

रविदास—लेकिन यह भी सोचा है, दुनिया क्या कहेगी, 'बेटा हाकिम हो गया है और बाप निखट्टू'। न बाबा, मैं यह बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ। जिन हाथों से कर्ज़ा लिया है उन्हीं हाथों से उतारकर साँस लूंगा। मगर हाँ, एक साध है मन में, कर्ज़े की पाई-पाई उतर जाए तो···।

सोनिया—तो क्या करोगे काका ?

रविदास—चुनाव लड़कर कमेटी में जाऊँगा, और अगर जीत गया तो एक बार लोकसभा में जाऊँगा।

सोनिया—जो कहीं पहले ही चुनाव में हार गए ?

रविदास—कोई बात नहीं, कमेटी के बाहर खड़ा होकर भाषण दिया करूँगा। अरी अपनी आवाज़ सुनानी होती है, कोई अन्दर जाकर चुपके से कह दे और जिसमें दम हो बाहर से गड़का मार दे।

सोनिया—तो यूं कहो लीडर बनने की सोच रहे हो।

[मस्तराम सफेदी वाले का प्रवेश, उम्र लगभग पच्चीस वर्ष, होली के स्वांग का जोकर बना है।]

मस्तराम—लीडर, मुझ से ठेका कर लो काका। छः महीने के अन्दर-अन्दर लीडर न बना दूं तो मुँह काला कर देना मस्तराम सफेदी वाले का।

रविदास—आरे मस्तू बेटा, तेरी ही बाट देख रहा था। रामू के हाथ संदेशा मिल गया था क्या ?

मस्तराम—अभी बताया है रामू ने। मैं अपनी जन्त्री लिखने ही बैठा था फिर सोचा पहले काका की बात ही सुन लूं।

[मस्तराम थैले में से एक कापी निकालता है।]

रविदास—बहुत अच्छा किया। सोनिया ! चाय ले आ बेटे, नशा टूट रहा है।

सोनिया—अभी लाई काका।

[सोनिया का अन्दर की ओर प्रस्थान।]

रविदास—अरे, यह कापी-सी क्या डाले रखता है झोले में।

मस्तराम—यह कापी नहीं काका, मुनी मस्तराम का लिखा हुआ नीतिशास्त्र है। इसमें लिखी हुई हर बात पत्थर की लकीर समझो। नहीं मानते, अभी निकालकर दिखाता हूँ लीडर बनने का नुस्खा।

रविदास—लेकिन, यह तो वता दे लीडर कैसा वनाएगा: असली या नकली।

मस्रातम—असली ! असल का नाम मत लो काका। असल का तो जहर भी नहीं मिलता मार्किट में। "यह जमाना ही नकली चीज़ों का है और उसीकी गाहकी है आज।

रविदास—तो फिर सुना दे लीडर वनने का नुस्खा, हम भी समझ लें तेरे गुर की वात।

मस्तराम—अभी लो, यह रहा, सुनो और दिल के कागज पर नोट करते जाओ।

रविदास—सुन रहा हूँ।

मस्तराम—झूठ की जड़ एक सेर।

रविदास—क्या कहा, झूठ की जड़ !

मस्तराम—विल्कुल, वड़ी-वड़ी कीमती जड़ी वूटियों का नुस्खा है यह।

रविदास—अच्छा, अच्छा।

मस्तराम— वेईमानी के वीज दो सेर।

रविदास—वाह !

मस्तराम—वदनीति का वनप्शा तीन सेर और मक्कारी का मुनक्का एक धड़ी।

रविदास—ठीक है, कुल वज़न हो गया ग्यारह सेर।

मस्तराम—विल्कुल, इन सव चीज़ों को खारवाज़ी की खरल में रगड़ कर, पार्टीवाज़ी की पोटली में वांध दो।

रविदास—वांध दिया।

मस्तराम—अब पत्तेवाजी के पानी में भिगो दो।

रविदास—भिगो दिया।

मस्तराम—फिर एय्यारी की हाँडी में डाल चालबाज़ी के चूल्हे पे चढ़ा दो।

रविदास—(हँसकर) समझ लिया, उसके बाद क्या करना है ?

मस्तराम—ज़ब जोशान्दा तैयार हो जाए तो छल-कपट की छाननी में छान लो।

रविदास—छान लिया।

मस्तराम—अब बेशरमी के वेदमुश्क के साथ एक महीने में चार सौ बीस बार इस्तेमाल करो। छः महीने के अन्दर-अन्दर लीडरी चमक उठेगी।

रविदास—वाह ! क्या कहने हैं तेरे इस नुस्खे के। मगर हां, इसके साथ खुराक भी डबल खानी पड़ेगी।

मस्तराम—खुराक की खुली छुट्टी है। जो मिले खा जाओ, जिसका मिले पी जाओ। परहेज सिर्फ दो चीज़ों का।

रविदास—वह कौन-सी चीज़ें हैं ?

मस्तराम—सच्चाई और नेकी। इन दोनों बूटियों की खुशबू भी सूंघ ली तो सारा नुस्खा बेकार हो जाएगा।

रविदास—अरे तेरी कापी तो सचमूच का शास्त्र है मस्तराम। और क्या-क्या लिखा हैं इसमें ?

मस्तराम—इसमें सबकुछ लिखा है काका। अपने पास तो पेट दर्द से लेकर पंचवर्षीय योजना तक के टोटके मौजूद हैं।

रविदास—इधर ला, मैं भी पढ़कर देखूं तेरा शास्त्र।

मस्तराम—देख लो, मगर पढ़ा नहीं जाएगा। इसकी भाषा हम खुद ही लिखते हैं और खुद ही पढ़ते हैं।

रविदास—तो फिर तू ही सुना दे कोई और नुस्खा जिससे सिर पे चढ़ा हुआ कर्ज उतर जाए जल्दी से।

मस्तराम—तुम्हारा मतलव है कमाई का धन्धा, अभी लो।

रविदास—लेकिन वेईमानी की वात न हो यह समझ ले।

मस्तराम—विल्कुल नहीं, सीधा-सच्चा ठेकेदारी का काम है। यह रहा, सफा नम्बर एक सौ दस। आ हा हा, सेवा की सेवा और मेवा की मेवा।

रविदास—मगर यह ठेकेदारी काहे की है।

मस्तराम—ठेकेदार अन्तिम संस्कार।

रविदास—अन्तिम संस्कार—मरने के वाद भला क्या काम हो सकता है ?

मस्तराम—वही तो एक काम वाकी है जिसमें आज ठेकेदारों की ज़रूरत है।

रविदास—मैं तेरामतलव नठीं समझा।

मस्तराम—मतलव अभी समझाता हूँ (लैक्चर देते हुए) आज का जमाना तरक्की का है। इन्सान के काम-काज वढ़ते जा रहे हैं। आपस का प्यार घटता जा रहा है; सौ मोत के वाद, लाश को ठिकाने लगाने के लिए अब आप लोगों के पास वक्त नहीं रहा। सो अर्थी निकालने के लिए, फूल चुनने के लिए, क्रियाकर्म करने के लिए आज ठेकेदारों की ज़रूरत है। (लैक्चर देता हुआ वीच में एक वार भूल जाता है और कापी को उठाकर देख लेता है।)

रविदास—छिः छिः मौत के काम में दुकानदारी कितनी बुरी वात है।

मस्तराम : बुरी बात क्यों ? जब जीवन के सब कामों में दुकानदारी चल रही है तो मौत में क्यों न चले। ठेकेदारों को नया धन्धा मिलेगा और जनता को आराम।

रविदास : आराम ? आराम कैसे मिलेगा ?

मस्तराम : मरने वाले के रिश्तेदार एक फार्म पर नाम, पता और मजहब लिख देंगे। बाकी सब काम ठेकेदार का। पैसे मिले नहीं कि अर्थी चली नहीं और जो पैसे डबल दे तो अर्थी के साथ रोने वाले भी ठेकेदार के, ठेकेदार के, ठेकेदार के (छाती पीटता है।)

[सोनिया का चाय के दो गिलास लिए हुए प्रवेश।]

सोनिया—चाय ले लो काका।

रविदास—इस विद्वान की बातें सुनीं सोनिया।

सोनिया—यह तो गपोड़शंक है। इतना विद्वान होता तो अपना कल्याण न कर लेता।

मस्तराम—विद्वान,तो अब कौन-सी कमी है अपने कल्याण में। काका, तुम भी चमार हो और मैं भी। तुम दिन-रात काम में जुटे रहते हो लेकिन अपने धर्म-ईमान से बताना कभी सात रुपये दिहाड़ी से एक पैसा भी ज्यादा कमाया है ?

रविदास—अरे सात भी कहाँ नसीब होते हैं, सारे खर्चे निकालकर साढ़े पांच ही समझ ले।

मस्तराम—और मुझे देखो, बिना जूते को हाथ लगाए पन्द्रह रुपए रोज़।

सोनिया—पन्द्रह रुपये एक दिहाड़ी में ?

मस्तराम—जी हाँ, और अपनी दिहाड़ी सिर्फ पाँच घण्टे की होती है।

रविदास—बिल्कुल झूठ! सफेदी के काम में चार रुपये से ज्यादा वच ही नहीं सकते।

मस्तराम—अजी सफेदी को मारो गोली, अपना असली काम तो कालख़ का है।

रविदास—कालख़ का, कालख़ का क्या काम है रे।

सोनिया—चोरी करता होगा या जेब काटता होगा, जिस दिन पकड़ा गया सारी कालख़ की कमाई निकल जाएगी।

रविदास—सच मस्तू, क्या तू चोरी की कमाई खाता है।

मस्तराम—चोरी हूँ, चोरी करना तो जाहिल आदमियों का काम है। होशियार आदमी तो मिलावट का काम करते हैं मिलावट का।

सोनिया—मिलावट का काम ?

मस्तराम—मिलावट नहीं समझती। देसी घी में डालडा, काली मिर्च में पपीते के बीज और लाल मिर्च में गेरू !

रविदास—तू काहे की मिलावट करता है यह वता।

मस्तराम—मिलावट तो मेरा मालिक करता है काका, मैं तो सिर्फ उसकी कम्पनी में नौकर हूँ। बीसियों दुकानें चल रही हैं। हर जगह बोर्ड लिखा पाओगे—'शुद्ध वैष्णव आलू-छोले'।

सोनिया—नकली घी डालते होंगे और ढिंढोरा पीटते होंगे असली घी का।

मस्तराम—यह मिलावट तो घटिया किसम की है।

मिलावट वह, जो पता न चले, और दुनिया कहे माल असली है।

रविदास—तो फिर तुम्हारा क्या गुर है।

मस्तराम—हम चने वैष्णव उबालते हैं, और तरी डालते हैं गोश्त की।

रविदास—अरे बाप रे बाप ! फिर तो तेरा मालिक कोई चाण्डाल मालूम होता है।

मस्तराम—चाण्डाल नहीं काका, तिलकधारी गोपालक है, गौड़ ब्राह्मण।

रविदास—और वह ब्राह्मण जानता है तू जात का चमार है।

मस्तराम—बड़ी अच्छी तरह से, लेकिन पैसे के मुआमले में कोई जात नहीं चलती। बड़ी जात वाले बेईमानी के पैसे भी बड़े माँगते हैं और छोटी जात वाले छोटे।

रविदास—तो तुम लोग भगवान से भी नहीं डरते।

मस्तराम—हमारी कम्पनी ने भगवान को भी अपने साथ गाँठ रखा है। सब बोर्डों पर तस्वीर बना रखी है—मुरली मनोहर, कृष्ण कन्हैया।

रविदास—अरे हाँ, तस्वीर की बात याद आया। जिस काम से तुझे बुलाया था वह तो भूल ही गया, लेकिन ठहर जा, एक कन्हैया की तस्वीर हमारे पास भी आई है। अभी लाता हूँ।

[रविदास का अन्दर की ओर प्रस्थान, सोनिया का प्रवेश]

सोनिया—मैं स्कूल जा रही हूँ बुआ।

मस्तराम—सोनिया।

सोनिया—क्या है ?

मस्तराम—एक जोड़ा कंगन लाया हूँ।

सोनिया—तो मैं क्या करूँ, पहन ले अपने हाथों में।

मस्तराम—मैं तेरे हाथों के लिए लाया हूँ सोनिया।

सोनिया—मुझे नहीं चाहिए, छोड़ मेरा रास्ता, देर हो रही है मुझे।

मस्तराम—एक बार ले तो ले, अच्छे न लगें तो फेंक देना।

[सोनिया नाराज़ होकर दूसरी ओर से जाने लगती है

मस्तराम वढ़के रास्ता रोक देता है]

मस्तराम—मैं वड़ा बे नसीब आदमी हूं, सोनिया।

सोनिया—कालख़ की कमाई खाता है, फिर भी तू बेनसीब है।

मस्तराम—कमाई, पैसा हर चीज़ नहीं होती सोनिया। मैं पैदा हुआ तो माँ मर गई, बड़ा हुआ तो बाप छोड़ गया, इस्कूल गया, तो मास्टर जी चलते बने।

सोनिया—अब शादी की न सोचना ! नहीं तो बहू भी जाती रहेगी।

[सोनिया का गुस्से में प्रस्थान। रविदास का फोटो लिये हुए प्रवेश]

रविदास—यह देख, पहचान तो कौन है।

मस्तराम—अरे, यह तो अपना भैया राजू है वकील साहब।

रविदास—अब वकील नहीं रहा, मजिस्ट्रेट हो गया है।

मस्तराम—सच, राजू भैया मजिस्ट्रेट हो गया है।

रविदास—यह रही उसकी चिट्ठी।

मस्तराम—चिट्ठी को रहने ही दो काका, तबीयत खुश हो गई।

जी चाहता है दो-चार वदमाशों के लठ मार दूँ।

रविदास—अरे, लड़ाई मोल लें हमारे दुश्मन। वह आज घर आ रहा है, इसलिए घर में सफेदी होनी चाहिए।

मस्तराम—घर की सफेदी, तुम कहो तो सारे मुहल्ले की सफेदी कर दूँ। उसने तो झण्डे गाड़ दिए अपनी विरादरी के! अव एक बात है काका, उसके स्वागत का पूरा प्रवन्ध होना चाहिए।

रविदास—लेकिन वह तो आज ही आने वाला है।

मस्तराम—कोई वात नहीं, होली पर सारी विरादरी मौजूद होगी। मैं फूलों के हार ले आता हूँ, स्कूल में वच्चे जमा हैं उनके हाथों में झण्डियाँ थमा देंगे।

रविदास—और मिठाई भी वनवा दे कहीं से।

मस्तराम—उसकी तुम चिन्ता न करो। अपनी कम्पनी से एक मन लड्डू वनवाता हूँ अभी।

रविदास—मगर देख, कहीं देशी घी की जगह शुद्ध चर्वी न डाल देना।

मस्तराम—कभी नहीं, यह तो अपने घर का सौदा है। (वाहर जाकर फिर अन्दर आ जाता है) अरे वाप रे वाप, सवेरे-सवेरे यह किस मूँजी के दर्शन हो गए!

रविदास—कौन दिखाई दे गया है तुझे।

मस्तराम—चौधरी सुखलाल, इधर ही चला रहा है! (छुप जाता है। वाहर से सुखलाल की आवाज) जयराम जी की रविदास।

रविदास—जयरामजी की भैया जी, आओ वैठो। मैं अपने

लिये हुक्का ताज़ा कर दूँ।

[सुखलाल का प्रवेश—उम्र लगभग ५० वर्ष, मनहूस सूरत, मूढ़े पर बैठता है। मस्तू चुपके से खिसकता है तो सुखलाल अपनी बेंत उसके पाँव में अटका देता है]

सुखलाल—क्यों रे सुसरे, मुंह क्यों छिपा रहा है हमसे, अब तो तूने पैसे नहीं देने हमारे।

मस्तराम—तुम्हारे दर्शन करते हुए डर लगता है मामा।

सुखलाल—क्यों ?

मस्तराम—बाहर जाते ही जेब कट जाएगी या एक्सीडेंट हो जाएगा।

[और पैर छुड़ाकर बाहर भाग जाता है।]

सुखलाल—ठहर जा हरामी के बच्चे, अभी एक्सीडेंट करके दिखाता हूँ तुझे। कल फिर नामे का टोटा पड़ेगा तो जूते चाटने आयेगा मेरे पास, उस वक्त सौ जूते मारूंगा तेरे सर में।

रविदास—छोड़ो सुखलाल, इसकी बुद्धि अभी छोकरों वाली है।

सुखलाल—छोकरा नहीं, महा चण्ट है साला। मुहल्ले भर के लौंडों को सिखाएगा सुखलाल सूदखोर है, आदमखोर है, बे-ईमान है। किसी दिन अन्दर करा दिया तो छठी का दूध याद आ जायगा।

रविदास—गुस्से को थूक दो चौधरी, कहो दूध पियोगे या चाय।

सुखलाल—न भाई रहने दो, यह दूध और चाय, यही पूछकर टरका दिया करो।

रविदास—तो हुकम करो, आज सवेरे-सवेरे कैसे कष्ट किया।

सुखलाल—जब तुम लोगों ने कष्ट देने की कसम ही खा रखी है तो मैं क्या करूँ। अब कहाँ है तुम्हारी बीवी जो पिछली बार कहती थी, "भजन किया करो चौधरी पैसे खुद ही पहुँच जायेंगे।"

[गंगो का प्रवेश···]

गंगो—मैं तो अब भी यही कहती हूँ चौधरी। वसूली के पीछे मारे-मारे न फिरो, सब कष्ट दूर हो जाँयगे।

सुखलाल—तो सीधा ही कह दे, अफीम की गोली खाकर सो जाओ, न रहे बाँस और न बजे बाँसुरी।

गंगो—मैं तो तुम्हारे सुख-चैन के लिए कह रही हूँ। पैसे का मोह आराम नहीं लेने देता।

सुखलाल—बस रहने दे, हम बिना आराम के ही अच्छे हैं। लोग कर्ज़ लेने का मोह नहीं छोड़े और हम, हम वसूली का मोह छोड़ दें।

रविदास—गंगो का यह मतलब नहीं सुखलाल कि······

सुखलाल—अरे मैं सब के मतलब जानता हूँ। कर्ज लेने के वक्त तो हम देवता दिखाई देते हैं, और जहाँ हमने माँगना शुरू किया तो असुर दिखाई देने लगे, बिना गाली कोई बात ही नहीं करता।

रविदास—गाली ! इस घर में गाली कोई नहीं देगा चौधरी।

सुखलाल—हां हां गाली भी नहीं दी और तकाजे पर कभी किस्त

भी नहीं दी। आज भी देख लो, पूरे पन्द्रह दिन ऊपर हो चुके हैं।

रविदास—अब के देर यूं हो गई, राजू का तार आया था सो उसे भेज दिए थे कुछ पैसे।

सुखलाल—अरे छोड़ इन बातों को। आज तेरे भले की सोच कर आया हूँ, मान ले तो रोज़-रोज़ का झगड़ा ही खतम हो जाय।

रविदास—तो कहो, क्या सोच आये ?

सुखलाल—मेरा इरादा है यहाँ एक सराय बनवा दूं। अरे आस-पास की जमीन तो मेरे पास रहन पड़ी है, तुम भी हजार पाँच सौ जो लेना चाहो, सो ले लो।

गंगो—(क्रोध से) चौधरी ! आज निकाली है तूने मुँह से यह बात। फिर कभी न निकालना। यह गरीब का झोंपड़ा बहुत खटक रहा है तुम्हारी आँखों में।

सुखलाल—मैं रविदास से बात कर रहा हूँ बुढ़िया, तुम बोलो जी।

गंगो—मैं कहती हूँ······

रविदास—तो मेरा भी जवाब सुन लो सुखलाल। कर्ज़ की किश्त तुम्हारे घर पहुँचा दी जाएगी, तुम यहाँ आने का कष्ट न किया करो।

सुखलाल—इतने अकड़ वाले हो तो फेंक दो नामा मेरे मुंह पर, और छुड़वा लो अपने घर को। न हो, तो अब कचहरी में आकर नाक रगड़ना। मैं माँगने नहीं आऊँगा समझे, कर्ज में पैसा दिया था पत्थर नहीं।

गंगो—समझ लिया, जितना कर्ज दिया था उससे दुगुना व्याज में हड़प लिया। उस पर कचहरी की फाँसी दिखाता है।

रविदास—कोई बात नहीं गंगो, इसने कचहरी का नाम लिया है, तो अब इससे कचहरी में ही बात करेंगे।

सुखलाल—हूँ-ऊँ! कचहरी के तुमने अभी दर्शन ही नहीं किए। खड़े-खड़े डोंडी पिट जायेगी। कानून की मार बहुत बुरी होती है।

गंगो—आज आने दे मेरे बेटे को, कानून की बात कानून से करेगा और पैसे की बात पैसे से।

सुखलाल—अरे, बेटा क्या कर लेगा मेरा, सैकड़ों वकील मक्खियाँ मारते-फिरते हैं।

रविदास—हमारा बेटा अब वकील नहीं रहा, मजिस्ट्रेट हो गया है।

सुखलाल—मैजिस्ट्रेट। (मखौल की हँसी हंसता है।) और दुनियाँ मर गई है मजिस्ट्रेट बनने को।

रविदास—अरे दाँत क्यों निकालता है, यह रही उसकी चिट्ठी, पढ़ ले।

सुखलाल—(पढ़कर) अरे वाह ! यह बात है। तो थूक दे गुस्से को, पहले मेरी बधाई ले। अरे ले न।

गंगो—पहले डोंडी पिटवा ले हमारी तू।

सुखलाल—अब रहने भी दे गंगो बाई। यह बात थी तो मुझे पहले ही बता दिया होता, देख भाई, हिसाब हिसाब की जगह है और भाई-बन्दी भाई-बन्दी की। तुम ही बताओ गंगो, अगर तुम्हारी डोंडी ही पिटवानी होती तो, तो तुम्हें

रुपया कर्ज ही क्यों देता, क्यों रविदास।

रविदास—क़र्ज़! क़र्ज़ तो तू ने व्याज के लालच से दिया था भाई-बन्दी के नाते से नहीं।

सुखलाल—अच्छा चल, तेरी ही मान ली, पर यह तो तू भी मानेगा हमारे रुपये ने तेरे बेटे को पढ़ा-लिखा कर मैजिस्ट्रेट बना दिया।

गंगो—तो कौन का एहसान कर दिया, व्याज ले ले कर हमारा सारा लहू भी तो चूस लिया।

सुखलाल—अरे मैंने क्या किया, करने-कराने वाला तो भगवान् है। अब तू कहे तो बकाया सारा व्याज ही छोड़ दूँ।

रविदास—न न न, यह मेहरबानी करने की कोई ज़रूरत नहीं,। जो वचन दिया है उसी हिसाब से दूँगा।

गंगो—जीते-जी नरक काट लिया है अब मरकर नरक में नहीं जाना।

सुखलाल—अरे कुछ मेरी भी सुनोगे या अपनी ही हाँकते जाओगे। जब राजू मजिस्ट्रेट हो गया है तो वह अब सिर्फ तुम्हारा ही बेटा नहीं रहा, सारी बिरारदरी का बेटा हो गया है, उसने सारी जात वालों का नाम रोशन किया है, हमारी नाक ऊँची की है और उस नाक को ऊँचा रखना मेरा पहला धर्म है। व्याज छोड़कर मैं एहसान नहीं कर रहा।

रविदास—कहने से पहले फिर सोच लो, पैसे का छोड़ना बड़ा जोखों का काम है।

सुखलाल—सोच लिया, तू कहे तो असल भी छोड़ दूँ। तूने सुखलाल की वसूली ही देखी है दया-धर्म नहीं देखा।

गंगो—यह बात कागज़ पर लिखवा लो चौधरी से आज का दिन गुज़रते ही सारा दया-धर्म भूल जायगा।

सुखलाल—लिखत, लिखत तो कागज़ की बात होती है, बात वह जो दिल पर लिखी जाए। बोलो, जो मैं कहूँ मंजूर है।

रविदास—क्या चीज़ ?

सुखलाल—मैं सारा पैसा छोड़ता हूँ और तुम, राजू का नाता मेरी बेटी मुलिया से कर दो।

गंगो—लो, निकल आई न बात। मैं सोच रही थी पैसे का मोह कैसे छोड़ दिया सुखलाल ने।

सुखलाल—तो कोई बुरी बात कर रहा हूँ, एतबार न हो तो लिखत में पक्की कर लो। लाओ कलम दवात लिखवा लो!

रविदास—तू तो ऐसी बात कर रहा है जैसे शादी मेरे साथ होनी है। राजू के मन में क्या है यह तो वही जानता है।

सुखलाल—तुम कुछ नहीं कहोगे उससे ?

रविदास—बिल्कुल नहीं, वह पढ़ा-लिखा है, हाकिम है। जो उसकी समझ आवेगा, करेगा।

सुखलाल—अरे हाकिम हो गया है ब्राह्मण तो नहीं हो गया। बिरादरी के बाहर बेटी नहीं मिलेगी, धक्के मिलेंगे धक्के।

गंगो—तो बिरादरी के अन्दर एक तुम्हारी ही बेटी है, और कोई नहीं है ?

सुखलाल—है क्यों नहीं, पर दस-पन्द्रह हजार दहेज में लाने वाली सिर्फ सुखलाल की वेटी है, और कोई नहीं।

रविदास—हमें वहू चाहिए सुखलाल, पैसों की पोटली नहीं।

गंगो—और घर में सोनिया मौजूद है, हमें कहीं जाने की जरूरत भी नहीं।

सुखलाल—सोनिया, वह यतीम छोकरी जो भीख के टुकड़ों पर पली है।

गंगो—तुम्हारे घर तो कभी माँगने नहीं गई।

रविदास—और जिस दिन माँगने जाए उस दिन सुनाना यह भीख के टुकड़े की वात।

सुखलाल—तुम मेरी वेइज्ज़ती कर रहे हो रविदास।

रविदास—वेइज्ज़ती क्यों, नाता तो दिल की वात है, जवर-दस्ती की नहीं।

सुखलाल—तो यह रिश्ता तुम्हें मंजूर नहीं।

गंगो—विल्कुल नहीं, एक वार नहीं, सौ वार नहीं, हज़ार वार नहीं।

रविदास—गंगो।

सुखलाल—वहुत अच्छा, ईंट से ईंट न वजा दूँ तो मेरा नाम सुखलाल नहीं। पांच लाख की जायदाद है मेरी, ऐसे ऐसे कई मजिस्ट्रेट जेव में धरे रहते हैं मेरी।

रविदास—तो निकाल ले अपनी जेव से और व्याह दे अपनी लौंडिया को।

सुखलाल—पहले तुम्हारे मजिस्ट्रेट को निकालूँगा इस घर से और फिर देखूँगा इस छिनाल [illegible] सोनिया को।

गंगो—जबान सम्भाल कर बात करो सुखलाल। छिनाल मत कहो मेरी सोनिया को।

सुखलाल—कहूँगा, कहूँगा, कहूँगा।

गंगो—तो निकल जा इस घर से और करले अपना मुँह काला।

[मस्तू का तेज़ी से प्रवेश, होली के रंग से सुखलाल का मुंह काला कर देता है।]

मस्तराम—कर दिया बुआ।

[बाहर से स्वाँग वालों का शोर सुनाई देता है।]

सुखलाल—कमीने, कमज़ात! अभी जाकर थाने में रपट देता हूँ। हथकड़ी लगवा दूँगा। एक-एक को कालापानी भिजवा दूँगा। फाँसी लगवा दूँगा।

[होली के स्वाँग वालों का नाचते और गाते हुये प्रवेश। सुखलाल घबराकर बाहर भाग जाता है। सोनिया भागकर अन्दर आती है और रविदास के कान में कुछ कहती है। थोड़ी देर बाद कुछ आदमियों का राजू को लिये हुए प्रवेश। राजू बारी-बारी सबसे मिलता है। कुछ लोग सुखलाल को ज़बरदस्ती बाहर से पकड़ कर मंच पर ले आते हैं और होली की खुशी में शामिल करते हैं।]

गाना

यार कणकैटा जी यार कणकैटा,
मैं तो भटीरे पूरे का कणकैटा ॥ टेक ॥

गाली मत ना काढ़े मुंह ते सुनले भैया साहूकार,
जुल्म की नेग चलेली इबना मिट के रहेगा अत्याचार
ब्राह्मण, तेली, धोबी, बनिया, ठाकुर, भंगी और चमार
आज गले मिल-मिल के देखो मनायें होली का त्योहार,

आज़ाद मुल्क है इनका—सबका, मन नहीं ठाने इनसे रार,
ऊंच नीच ने धरो परेने, करलो देश का बेड़ा पार।
यार कणकैंटा जी यार कखकैंटा,
मैं तो भटीरेपुरे का कणकैंटा।

[नाच तेजी पकड़ता है। रविदास प्रसन्न होकर सबको होली का प्रसाद बांटता है।]

(यवनिका पतन)

द्वितीय अंक

समय—दूसरे दिन दोपहर।

दृश्य—अंक एक की भाँति।

परदा खुलने पर मस्तराम एक वड़े ड्रम में सफेदी वना रहा है। भीतर कमरे में लटुआराम के गाने की आवाज सुनाई देती है। उम्र लगभग १८ वर्ष।]

मस्तराम—लटुआराम ! लटुआराम !अवे ओ तानसेन की औलाद !

लटुआराम—(वाहर आकर) मुझे वुलाया उस्ताद !

मस्तराम—उस्ताद के वच्चे यह क्या वना रखा है ?

लटुआराम : चूना उस्ताद !

मस्तराम—(डाँटकर) चूना उस्ताद! च ल जल्दी से और मिला। मैं भी वहीं आ रहा हूँ। ज़रा अपना पाइप सुलगा लूँ नशा टूट रहा है।

लटुआराम—उस्ताद, एक वीड़ी इधर भी।

मस्तराम—फिर वही वीड़ी।

लटुआराम—तो क्या है ?

मस्तराम—तुझे कितनी बार कहा है कि अपना इसटैण्डर्ड ऊँचा रखा कर। यह ले पीला गोलड फलेक।

लटुआराम—थैंकयू डियर मास्टर।

मस्तराम—साँझ से पहले सारा काम खतम होना चाहिए। नहीं तो तेरा खात्मा कर दूंगा।

लटुआराम—आल राइट ! मगर हाँ। यह कमरे में सफेदी करनी है या खाली चूना ही लगा दूं।

मस्तराम—ऐ ! इधर ! वैठो ! अवे ओ सरूपनखा के भतीजे ! देखता नहीं यह गरीव आदमी का घर है। यहाँ पर भी चूना लगाकर वेईमानी करेगा।

लटुआराम—मैं गरीव-अमीर को नहीं जानता। ज़रा-सा चूना ज्यादा लग जाय तो तुम विगड़ने लगते हो। जैसे परसों लाला के घर विगड़ गए थे।

मस्तराम—लाला लोगों की वात और होती है मूरख। वह अपने धंधे में डंडी मारते हैं। और हम उनके धंधे में। हिसाव वरावर हो जाता है। मज़दूर के धंधे में डंडी मारेगा अगले जन्म में कुत्ते की जून में जायगा।

लटुआराम—(जोर से हँसकर) कुत्ते की जून में। जून की परवाह नहीं उस्ताद। कुत्ते की जात वढ़िया होगी तो मेम साहव की गोद में खेलेगा।

मस्तराम—धत् तेरे की।

[पीछे के दरवाज़े से राजू का अखवार पढ़ते हुए प्रवेश···]

राजू—यह किसको डाँट पिलाई जा रही है

मस्तराम—यह लौंडा भंगी का है सरकार। छठी जमात में पढ़ रहा है।

लट्टुआराम—नमस्ते साहब।

राजू—शाबाश ! पढ़ाई छोड़ना नहीं। क्या नाम है तुम्हारा ?

मस्तराम—हम इसे लट्टुआराम कहते हैं जनाब !

राजू—देखो मस्तू ! यह बार-बार मुझे साहब और सरकार कहकर गालियाँ देना मत शुरू कर दे। तू मेरा बचपन का यार है। मैं मजिस्ट्रेट भले ही हो गया हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि अपने मित्रों का भाई नहीं रहा। मुझे तो वही राजू भैय्या ही कहा कर।

मस्तराम : बहुत अच्छा भय्या जी, मगर देख लो किसी दिन कचहरी में फँस गया तो उस दिन भय्या नहीं कहने दोगे।

राजू—नहीं क्यों। उस दिन भाई कहोगे तो भाई-बन्दी का पूरा सबूत दूँगा।

मस्तराम—सच। जुर्म कितना ही बड़ा हो। लिहाज़ कर दोगे।

राजू—बिलकुल ! जुर्म पाँच साल का होगा। सज़ा सात साल की दूँगा।

मस्तराम—वह क्यों ?

राजू—पाँच साल जुर्म के और दो साल भाईबन्दी के।

मस्तराम—जुग-जुग जिओ राजू भय्या ! यह बात तो मेरे शास्त्र में लिखने की है। यही बात सिखा दो आजकल के हाकिमों को, कल से रामराज्य हो जायगा।

[[मस्तराम शास्त्र उठाकर लिखता है।]

राजू—यह पोथा-सा क्या बना रखा है तूने ?

मस्तराम—इस शास्त्र में लिखे हुए नुसखे सुनोगे ?

राजू—नुसखे वाद में सुनूँगा। पहले अपनी वस्ती का हालचाल सुना दे।

मस्तराम—अभी लो। कौन से सन का सुनोगे। तुम महीने का नाम लो और मैं सफा नम्वर निकालता हूँ।

राजू—यह हालचाल भी शास्त्र में लिखा है क्या ?

मस्तराम—विलकुल मैं जवानी जमाखर्च कभी नहीं करता।

राजू—तो सुना दे पिछले चैत के महीने से।

मस्तराम—यह लो चैत १९५९ (कथा-वाचन की लय में) चौधरी सुखलाल पूँजीपति की दो वहुओं और एक गाय ने मिलकर पांच वच्चे दिए। और चौधरी छेलूराम चालीस साल की उमर में विना वहू के दर्शन किए ही इस दुनिया से चलता बना।

राजू—क्या गरीव छेलूराम मर गया ?

मस्तराम—जी हाँ! अव तो उसका पुनर्जन्म भी हो गया होगा। आगे सुनो, महीना वैसाख। वस्ती के वाहर भाषा के मामले में महाभारत हो गया। सात मर गए आठ घायल हुए और बीस पकड़े गए। दूसरे दिन पता चला, मरने मारने वाले सभी अनपढ़ थे।

राजू—अरे वाह! तेरा शास्त्र तो सचमुच इनाम देने के योग्य है।

मस्तराम—अव लगे हाथ आगे भी सुन लो। सावन और भादों में बरखा इतनी जोर की पड़ी, कि बच्चों का स्कूल बह गया।

राजू—तो क्या अभी तक अपना स्कूल पक्का नहीं बना।

मस्तराम—बिलकुल नहीं।

राजू—सरकार, कमेटी, जनता—किसी ने कुछ नहीं किया ?

मस्तराम—बहुत कुछ किया है। सरकार स्कीम सोचती रहती है। कमेटी काटती रहती है। और जनता के जमादार चन्दा जमा करके जीमते रहते हैं।

राजू—बस रहने दे मस्तू! यह बातें सुनकर तो दिल बहुत दुखी हो गया है।

मस्तराम—तो छोड़ो इन बातों को। शास्त्र बन्द किए देते हैं। अब एक मज़े की बात सुनो।

राजू—क्या बात है ?

मस्तराम—माघ के महीने से मस्तराम सफेदी वाले का मुहब्बत का मलेरिया हो गया है।

राजू—मलेरिया! वह कौन-सा मच्छर है जिसने तुझे काट खाया ?

मस्तराम—नाम सुनकर थप्पड़ तो नहीं मारोगे ?

राजू—नहीं-नहीं! थप्पड़ क्यों मारूँगा। मुहब्बत करना तो हर आदमी का हक है।

मस्तराम—उसका नाम है, सोनिया।

राजू—हमारी सोनिया।

मस्तराम—अभी तक तो तुम्हारी ही है।

राजू—वह भी तुझे चाहती है क्या ?

मस्तराम—खबर नहीं क्या चाहती है वह। मैं उस पर तो

डालने की कोशिश करता हूँ—वह मेरा मजाक ही उड़ा देती है।

राजू—इस रोग का कोई नुस्खा नहीं लिखा तेरे शास्त्र में।

मस्तराम—वस ! यही एक पन्ना खाली रह गया है।

राजू—तूने अम्मा से वात नहीं की ?

मस्तराम—एक दफा की वात थी। उसने जूता उतार लिया। वोली पाँच जमात पास नहीं। आठ पास वह माँगता है।

राजू—तो फिर वात कैसे वनेगी ?

मस्तराम—अव तुम्हीं कोई कानून लड़ाओ भय्या। नहीं तो अपना राम नाम सत हो जायगा।

राजू—मैं ! मैं खुद प्यार के चक्कर में पड़ा हूँ। समझ में नहीं आता क्या करूँ।

मस्तराम—तुम ! अरे मजस्ट्रेट भी प्यार करते हैं क्या ?

राजू—क्यों, उनके दिल नहीं होता क्या ?

मस्तराम—होता तो है। पर ज़रा कड़े किस्म के होते हैं ये।

राजू—मुहव्वत का मर्ज़ वड़े वड़ों को ढीला कर देता है मस्तू।

मस्तराम—मगर वह कौन है ?

राजू—मेरे साथ वकालत में पढ़ती थी।

मस्तराम—नाम क्या है उसका ?

राजू—नलिनी !

मस्तराम—नलिनी ? नल वालों की वेटी है क्या ?

राजू—अरे नहीं। यह उसका नाम है जात नहीं।

मस्तराम—जात क्या है ?

राजू—ब्राह्मण।

मस्तराम—ब्राह्मण ?

राजू—हां।

मस्तराम—वह तुम्हारी जात जानती है क्या ?

राजू—नहीं।

मस्तराम—तूने बताई ही नहीं ?

राजू—नहीं !

मस्तराम—क्यों ?

राजू—मैं डरता था, कहीं वह मुझसे नफ़रत न करने लगे।

मस्तराम—नफरत ? प्यार आदमी से होता है या उसकी जात से ?

राजू—ऐसा हम सोचते हैं, बड़ी जात वाले नहीं।

मस्तराम—मगर सुनो, काका को बता दिया है तुमने ?

राजू—यही वात कहने मैं आज घर आया हूँ। अगले हफ्ते नौकरी पर जाना है मुझे।

मस्तराम—फौरन कह दो भइया। ऐसा न हो वह कहीं और हामी भर दें। सुखलाल वहुत पीछे पड़ा हुआ है।

राजू—अपनी बेटी मूलिया के लिये ?

मस्तराम—हाँ। मेरी मानो तो चुपके से कचहरी में जाकर शादी कर लो।

राजू—इरादा तो मेरा भी यही है लेकिन…

मस्तराम—लेकिन देर क्या ?

राज—मैं सोचता हूँ शादी से पहले उसे अपनी जात वता दूं।

मस्तराम—लड़की के माँ-वाप तैयार हैं क्या ?

राजू—लड़की की सिर्फ मां है, पिता मर चुके है; वहुत बड़ी

जायदाद है उनकी।

मस्तराम—तो फिर देर मत करो। शादी के बाद सारी जायदाद के मालिक हो जाओगे।

राजू—नहीं मास्तू, मैं सिर्फ उसे चाहता हूँ, उसकी जायदाद को नहीं।

[बाहर सोनिया की आवाज़ सुनाई देती है।]

सोनिया—(नेपथ्य में) अभी आती हूँ ताई। ज़रा घरबार की सुध ले लूँ।

राजू—सोनिया आ रही है।

मस्तराम—तुम कहो तो मैं अपनी बात कर लूँ ?

राजू—हां। मैं अम्मा से कह दूंगा।

[राजू बाहर जाने लगता है।]

मस्तराम—(आवाज़ लगाकर) लटुआराम, ऐ···!

[लटुआराम बाहर आकर···]

लटुआराम—कहो उस्ताद !

[मस्तराम उसे बाहर जाने का इशारा करता है। राजू और लटुआ का पिछले दरवाज़े से प्रस्थान। मस्तराम तेज़ी से अन्दर चला जाता है। सोनिया का बायें दरवाज़े से प्रवेश। स्कूल की कापियाँ देखने लगती है। थोड़ी देर बाद मस्तराम का भीतर से प्रवेश]

मस्तराम—सोनिया।

सोनिया—हूँ।

मस्तराम—ज़रा कमरे की सफेदी देख लो। अच्छी न हो तो एक कोट और कर दूँ।

सोनिया—बहुत अच्छी है।

मस्तराम—तुमने देखी तो है नहीं।

सोनिया—मैं देखना भी नहीं चाहती। कालिख की कमा खाने वाले सफेदी अच्छी करें या बुरी, कोई फर्क नहं पड़ता।

मस्तराम—तुम्हें कालिख की कमाई अच्छी नहीं लगती ?

सोनिया—मुझे क्या, तुझे अच्छी लगती है तो किए जा।

मस्तराम—तू कहे, तो मैं अभी छोड़ दूं।

सोनिया—मैं क्यों कहूँ ! नफा नुकसान तेरा अपना है।

मस्तराम—मेरा नफा तेरी राजी में है सोनिया। जो तू कहेगी वही करूँगा।

सोनिया—मैं कहूँ कूँएं में छलाँग लगा दे, तो लगा देगा ?

मस्तराम—एक बार कहकर देख सर के बल कूद पड़ूँगा।

सोनिया—तो छोड़ दे बेईमानी की कमाई।

मस्तराम—छोड़ दी। आज से जो बेईमानी करे सीधा नर्क में जाये।

मस्तराम—अब एक बात मेरी भी सुन ले।

सोनिया—कंगन की बात नहीं सुनूंगी।

मस्तराम—नहीं, नहीं। कंगन की नहीं। आज तो पूरे चूड़े की बात कहने आया हूँ।

सोनिया—(गुस्से से) मस्तू !

मस्तराम—शादी की हामी भर दे सोनिया, राम कसम ! उमर भर तेरे कहने पर चलूँगा।

सोनिया—मैं पहले भी तुझे लाख बार कह चुकी हूँ। मुझे

यही बातें अच्छी नहीं लगतीं।

मस्तराम—मैंने कोई बुरी बात तो नहीं कही।

सोनिया—मैं यह सुनना ही नहीं चाहती।

मस्तराम—आखिर एक दिन किसी से तो शादी करेगी ही।

सोनिया—मेरी शादी वहाँ होगी, जहाँ मेरी बुआ चाहती है।

मस्तराम—तेरी बुआ कहाँ चाहती है?

सोनिया—जहाँ मैं चाहती हूँ।

मस्तराम—कौन है वह?

सोनिया—क्या करेगा उसका नाम सुनकर?

मस्तराम—इस बात का फैसला। हम दोनों में से एक ही जिन्दा रहेगा।

सोनिया—इतनी हिम्मत है तेरे बाजुओं में?

मस्तराम—तू नाम बता दे उसका।

सोनिया—राजकुमार।

मस्तराम—राजू? बुआ तेरी शादी राजू से करना चाहती है?

सोनिया—और मैं भी उससे करना चाहती हूँ।

मस्तराम—इसलिए कि वह मजिस्ट्रेट हो गया है?

सोनिया—अगर न होता तो भी उसी से करती।

मस्तराम—अगर राजू ने इंकार कर दिया तो?

सोनिया—वह इनकार कभी नहीं करेंगे।

मस्तराम—बहुत अच्छा (लाठी उठाकर चलता है।)

सोनिया—तुम उनपर हाथ उठाओगे?

मस्तराम—नहीं—लठ उसके हाथ में दे दूँगा। पहले

पर मार दे फिर अपने।

[मस्तराम का बायें दरवाज़े से प्रस्थान। पिछले दरवाज़े से गंगो का प्रवेश।]

गंगो—अरे कोई है घर में ?

सोनिया—मैं हूँ बुआ।

गंगो—सोनिया—तू कब आई है स्कूल से ?

सोनिया—अभी आई हूँ।

गंगो—ज़रा पानी पिला दे मुझे। दम निकला जा रहा है प्यास से।

सोनिया—अभी लो।

गंगो—राजू खाना खा चुका है कि नहीं ?

सोनिया—अभी तो घर ही नहीं आए।

गंगो—मस्तू काम कर रहा है न ?

सोनिया—वह—वह अभी कहीं बाहर गया है। पानी ले लो बुआ।

गंगो—लाओ। मैं पत्री दिखा लाई हूँ गुरु जी से। अगले महीने का महूरत निकला है शादी का।

सोनिया—बुआ।

गंगो—कहो !

सोनिया—महूरत निकलवाने से पहले उनसे पूछ लेतीं तो अच्छा होता।

गंगो—पूछ लेती ? किससे पूछ लेती ! राजू से ? वाह। यह भी कोई पूछने की बात है।

सोनिया—मेरा मतलब है, बिरादरी के लोग हँसी तो नहीं उड़ायेंगे।

गंगो—हँसी। हँसी किस बात की ?

सोनिया—यही कि वह इतने पढ़े-लिखे हैं। हाकिम हैं। और मैं, मैं कुछ भी नहीं।

गंगो—यह भी कोई बात है। आठ जमात से ज्यादा कोई भी तो नहीं पढ़ी बिरादरी में। और फिर बेटा हमारा है जिससे चाहेंगे ब्याहेंगे।

सोनिया—यह तो ठीक है बुआ, लेकिन मेरे साथ ब्याह करके उन्हें दहेज भी तो नहीं मिलेगा।

गंगो—न सही। मेरा बेटा पैसें के लालच से शादी थोड़े ही करेगा। अगर उसने पैसे का नाम लिया तो नदी में कूदकर जान दे दूँगी। क्या उसने ऐसा कहा है ?

सोनिया—नहीं तो। उन्हें तो इस बात का ध्यान तक नहीं। यह तो मैं अपने मन से कह रही हूँ।

गंगो—उसने ज़रूर कोई इशारा किया होगा। जभी तो यह विचार आया तेरे मन में। उसे घर आने दे आज।

सोनिया—मैं रामजी की सौगन्ध खाती हूँ बुआ, उनकी तो मेरे साथ बात ही नहीं हुई।

गंगो—क्या कहा ? यह तेरे साथ बात तक नहीं करता ? इतनी अकड़ आ गई है उसमें।

सोनिया—नहीं-नहीं। बात तो की है, मेरा मतलब है, ऐसी बात कोई नहीं की।

गंगो—ऐसी बात उससे मैं करूँगी। देखती हूँ कैसे न करता

है। हाकिम होगा तो कचहरी में घर में नहीं।

सोनिया—तुम्हारे पाँव हाथ लगाती हूँ बुआ उनसे रंज की बात न करना।

गंगो—अरे, अरे, तू चिन्ता क्यों करती है, मैं उसकी माँ हूँ, दुसमन थोड़े ही हूँ। मगर बात सुन, तू भी अपने मुँह पर वह रंगरेजी चूना पोत लिया कर।

सोनिया—चूना ?

गंगो—अरे वो ही, जो डिब्बों में बिकता है। क्या कहते है उसे ? रामलीला में भी लगाया करते हैं।

सोनिया—पावडर।

गंगो—हाँ। हाँ। मुझसे नहीं कहा जाएगा यह नाम। तेरे चाचा जैसे मर्द तो गेरुए दातुन और काजल से ही काबू में आ जाते थे। पर अब वाले बहुत बिगड़ गए है निगोड़े।

सोनिया—डिब्बी तो मैंने भी ले रखी है बुआ। पर शर्म के मारे कभी लगाई ही नहीं।

गंगो—अरी शर्म से काम नहीं चलता आजकल। अब तो बे-शर्मी का जमाना आ गया है।

[रविदास का बाईं ओर के दरवाज़े से प्रवेश।]

सोनिया—काका आ रहे हैं बुआ।

गंगो—मेरा हुक्का उठा ला।

[सोनिया का भीतर को प्रस्थान।]

रविदास—तू तम्बाकू पीना न छोड़ियो रात भर खाँसी भले ही सताती रहे।

गंगो—यह आदत तो अब मरने के पीछे ही छूटेगी, तुम कहाँ

घूम रहे हो सवेरे से।

रविदास—बैठक लेने के चक्कर में पड़ा हुआ था गंगो।

गंगो—क्यों ?

रविदास—तू जाने अब दसियों आदमी मिलने आया करेंगे अपने राजू से। सो अलग बैठक का होना बहुत ज़रूरी है उसके लिए।

गंगो—तो फिर मिली कोई जगह ?

रविदास—मिलती क्यों नहीं, लखिया के दोनों चौवारे ले लिए हैं। रसीद परचा भी हो गया।

गंगो—वो ही जो चौपाल के सामने हैं।

रविदास—हाँ, क्यों एक नम्बर के हैं कि नहीं ?

गंगो—चौबारे तो बढ़िया हैं।

रविदास—लेकिन किराया भी बहुत बढ़िया लिया है मक्खी-चूस ने।

गंगो—कितना तय हुआ।

रविदास—पच्चास रुपए माहवार, दो महीने की पेशगी चुका आया हूँ।

गंगो—लेकिन राजू से भी पूछ लिया है कि नहीं।

रविदास—इसमें राजू से पूछने की क्या बात है, अलग जगह तो उसे चाहिए ही। सहर के अन्दर जाकर ऐसी जगह ढूँढ़ता तो कम-से-कम दो-सौ रुपये देने पड़ते और उस पर पगड़ी अलग।

गंगो—चलो अच्छा किया, शादी किए पीछे भी तो अलग जगह चाहिए ही थी।

रविदास—अब शादी की बात तू जाने और तेरा बेटा, मैं इस चक्कर में नहीं पड़ने का।

गंगो—चक्कर-वक्कर कुछ नहीं, अगले महीने का महूरत निकला है।

रविदास—महूर्त ?

गंगो—अब लगे हाथ यह फर्ज़ भी पूरा कर ही दो।

रविदास—लेकिन महूर्त निकलवाने से पहले बेटे से पूछ लिया है क्या।

गंगो—उसमें इससे पूछने की क्या बात है ?

रविदास—बात क्यों नहीं।

गंगो—जैसे तुमने चौबारे ले लिए, मैंने महूर्त निकलवा लिया।

रविदास—ओ हो, वह जगह की बात थी गंगो, यह घर-गृहस्थी की बात है, कहीं राजू ने इनकार कर दिया तो।

गंगो—इन्कार कैसे कर देगा, पूरे सोलह बरस की हो गई है सोनिया, अब ज़्यादा देर कंवारी रखना धर्म नहीं हमारा।

रविदास—तुम्हें तो सोनिया की चिन्ता लगी है, मैं पूछता हूँ राजू भी सोनिया के लिए तैयार है कि नहीं।

गंगो—तैयार क्यों नहीं, पूरे चौबीस बरस का हो गया है।

रविदास—तू तो ऐसी बात कर रही है जैसे गाय और बैल की जोड़ी तैयार हो रही है। मैं रज़ामन्दी की पूछ रहा हूँ, रज़ामन्दी का।

गंगो—तेरी समझ में नहीं आया यह रज़ामन्दी का चक्कर।

रविदास—(धीरे से) मेरा मतलब यह है, किसी और छोरी से इसक-फिसक न करने लगा हो। इसका रिवाज बहुत पड़

गया है पढ़े-लिखों में ।

गंगो—न न न, मेरा बेटा ऐसा बेसर्म नाहीं, जो बिना शादी किये पराई औरत से ऐसी बात करे ।

रविदास—बात को समझा कर गंगो । आजकल शादी से पहले हो जाती है ऐसी बातें, और लोग उसका बुरा भी नहीं मानते ।

गंगो—ये बातें पहले हो जाती हैं तो शादी के पीछे क्या होता है, सरफटोल ।

रविदास—अब तू तो बिल्कुल अक्खड़ है अक्खड़ ।

[सोनिया हुक्का लिए हुए प्रवेश]

गंगो—हां-हां मैं अक्खड़ ही सही ।

सोनिया—हुक्का ले लो बुआ ।

गंगो—लाओ ।

सोनिया—खाना परोस दूं काका ।

रविदास—परोस दे बेटी ।

[बाहर के दरवाजे से राजू का प्रवेश.]

राजू—ये रंग के डिब्बे सम्भाल ले सोनिया, सफेदी में डलेंगे । अम्माँ, मैं एक डाक्टर से बात कर आया हूँ, सांझ को चलेंगे तेरी आँखें दिखाने ।

गंगो—आँखों की बात पीछे होगी, पहले यह बता किसी छोरी के इसक में तो नहीं पड़ा है तू ।

राजू—मैं समझा नहीं अम्माँ ।

रविदास—मैं बताता हूँ बेटा । यह तो ऐसे बात करती जैसे कोई कूएँ में पत्थर फेंक दे । तू अन्दर चल ।

गंगो, मैं खुद ही वात कर लेता हूँ।

गंगो—इसमें छिपकर करने की क्या बात है, मेरे सामने ही कर लो न ?

रविदास—वेटी की वात माँ से होती है और वेटे की वात वाप से, यही तरीका है संसार का।

गंगो—तो तुम भी कर लो संसार का तरीका। पर यह समझ लो, महूर्त खाली नहीं जाने दूँगी, हाँ।

रविदास—अच्छा वावा अच्छा, तू जा तो सही।

[राजू गंगो को सहारा देकर भीतर की तरफ ले जाता.]

रविदास—मैं जानता हूँ राजू कि मैं एक जाहिल और गंवार आदमी हूँ। लेकिन तेरी अम्माँ की तरह अक्खड़ नहीं। नई सभ्यता का ज्ञान नहीं है मुझें। फिर भी लकीर का फकीर नहीं बनना चाहता। सो जो बात भी तेरे मन में ही विना संकोच के बता देना मुझे।

राजू—आप क्या पूछना चाहते हो काका।

रविदास—तू जानता है तेरी अम्माँ क्या चाहती है ?

राजू—जी हाँ।

रविदास—क्या भला।

राजू—यही, कि मेरी शादी सोनिया से हो जाए।

रविदास—तो फिर क्या विचार है तेरा ?

राजू—मैं मजवूर हूँ काका। अम्माँ की इच्छा पूरी नहीं कर सकता।

रविदास—क्यों, सोनिया पसन्द नहीं है तुझे ?

राजू—यह बात नहीं काका। दरअसल, दरअसल मैं किसी और

लड़की को वचन दे चुका हूँ।

रविदास—दूसरी लड़की को ? कौन है वह ?

राजू—मेरे साथ वकालत पास की है उसने।

रविदास—मज़हब क्या है उसका ?

राजू—जो मज़हब हमारा है।

रविदास—और जात।

राजू—ब्राह्मण।

रविदास—क्या कहा ब्राह्मण !

राजू—मैं सच कह रहा हूँ।

रविदास—और वह तुम्हारे साथ शादी करने को तैयार है ?

राजू—हम एक दूसरे को वचन दे चुके हैं।

रविदास—क्या ऐसा हो सकता है, मुझे विश्वास नहीं हो रहा।

राजू—सिर्फ तुम्हारी सहायता की ज़रूरत है काका।

रविदास—मेरी सहायता की। मुझे तो कोई इनकार नहीं। हमारा नाता ब्राह्मणों से हो जायेगा। मैं खुशी से पागल हो जाऊँगा। तू चिन्ता न कर। मैं मना लूँगा तेरी अम्माँ को। लेकिन सोनिया ! वह तेरी बहन भी तो है—पगड़ी रख दूँगा उसके पाँव में।

राजू—लेकिन इस नाते के लिए एक शर्त है काका।

रविदास—मुझे इस नाते के लिए सब शर्तें मंज़ूर हैं, जल्दी बोल क्या-क्या हैं।

राजू—वह इस घर में नहीं आयेगी।

रविदास—न सही, मैंने अलग दो कमरे ले लिए हैं तेरे लिए यह रही किराये की रसीद। बहुत बढ़िया……।

राजू—मेरा मतलब है……।

रविदास—शादी कचहरी में होगी। बारात नहीं जायेगी। परवाह नहीं। एक बार तेरा ब्याह हो जाये सारी बिरादरी को यहीं जीमा दूँगा।

राजू—मैं यहाँ नहीं रह सकूँगा काका मुझे भी यह घर छोड़ना पड़ेगा।

रविदास—चल ऐसा ही सही। हम यही समझ लेंगे हमारा बेटा बेटी थी और उनकी बेटी बेटा। हँसते-हँसते विदा कर देंगे तुझे।

राजू—मुझे समझने की कोशिश करो काका, मैं कुछ और कहना चाहता हूँ।

रविदास—क्या कहना चाहते हैं ?

राजू—इस शादी के बाद मेरा आप लोगों से कोई नाता नहीं रहेगा।

रविदास—नाता नहीं रहेगा ?

राजू—बात यह है कि मैंने उसे अपनी जाति नहीं बताई।

रविदास—जात नहीं बताई, क्या कहा था तूने, तू भी ब्राह्मण है।

राजू—नहीं, उसने कभी जात पूछी ही नहीं।

रविदास—तो फिर डर क्यों रहा है ?

राजू—मैंने उससे कहा था, मेरे मां बाप…।

रविदास—कौन हैं तेरे माँ-बाप ?

राजू—मर चुके हैं।

[रविदास बुत की तरह खामोश रह जाता है.]

राजू—मैंने ज़िन्दगी में बहुत बड़ी नीचता की है काका लेकिन न जाने क्यों, एक बार मेरे मुँह से यह बात निकल गई और फिर हमेशा मुझे इस झूठ का सहारा लेना पड़ा।

रविदास—इसलिए कि तुम जात के नीच थे। तूने मुझे की जात हमेशा ऊँची समझी।

राजू—काका, कहने के बाद मैं अपनी ज़बान काट सकता लेकिन तीर कमान से निकल चुका था।

रविदास—तीर, अरे तेरे इस तीर ने मिटे हुए सब घाव हरे कर दिए हैं जालिम। आज फिर वह स्कूल दिखाई दे रहा है जहाँ से हमें धक्के मार कर निकाला जाता था। वह गाँव का कुआँ जहाँ पानी पीने के लिए मौत का सामना करना पड़ता था। वह मन्दिर और शिवालय जहाँ पशु तो आज़ादी से घूम सकते थे मेरे जैसे इन्सान नहीं। यह सब कुछ होते हुए भी दिल की जोत टिमटिमाई ही थी बुझी नहीं। इस आस पर कि एक दिन इन्सान इन्सान को परखेगा, उसकी जात को नहीं। वक्त पलटा। स्कूलों के किवाड़ खुल गए, कुँओं ने हमें आवाज़ दी, मन्दिरों ने हमें अपना लिया और आज, आज तूने सब कुछ पाकर माँ-बाप को खो दिया।

राजू—मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है काका, मैं नहीं जानता मैं क्या करूँ, मैं नहीं जानता—

रविदास—खैर, कोई बात नहीं, तेरी भलाई इसमें है तो तू चला जा, हम तेरे रास्ते का रोड़ा नहीं बनेंगे। कभी-

कभी जूतों की मरम्मत के बहाने बुलावा लेना। जी भर के देख लेंगे तुझे।

[रविदास का अन्दर की तरफ प्रस्थान, बाहर के दरवाजे से सुखलाल और नलिनी का प्रवेश।]

सुखलाल—आ जाओ मेम साहब। यह रहा इनका घर और यह रहा वह चमार मैजिस्ट्रेट।

राजू—नलिनी तुम।

नलिनी—क्यों मेरा यहाँ आना अच्छा नहीं लगा।

सुखलाल—यह रही सिलाई की मशीन मेम साहब, जिस पर इसका बाप चमड़े का काम करता है। इसका बाप चमार, मामा चमार, फूफा चमार, यह कैसे अलग हो सकता है अपने कुनबे से। आप मुझे ही देख लो, लाखों की जायदाद है मेरी। लेकिन अपनी जात से इन्कार कभी नहीं किया मैंने। जातपात तो भगवान् की देन है। हमारा धर्म नहीं कि हम आप लोगों की बराबरी करें।

राजू—(गुस्से से) इस घर की चौखट से निकल जाओ सुखलाल, वरना······

सुखलाल—अरे हाँ हाँ मैं खुद ही जा रहा हूँ, मैं तो तुम्हारी असलियत दिखाने आया था। मेम साहब आपकी मोटर की रखवाली करता हूँ। इसकी और इसके सारे खानदान की हिस्टरी बताऊँगा आपको, यह घर भी मेरे पास रहन रखा हुआ है।

[सुखलाल का प्रस्थान.]

राजू—बैठो नलिनी।

नलिनी—शुक्रिया, मैं बैठने नहीं आई। तुम्हारी चिट्ठी देने आई हूँ।

राजू—चिट्ठी किसने भेजी है।

नलिनी—सरकार ने अछूत होकर इम्तिहान में फर्स्ट आने के लिए मुबारकबाद भेजी है?

राजू—शुक्रिया।

नलिनी—तो यह है तुम्हारी असलियत। जिसको हमेशा तुम ने छुपाए रखा। तुम्हारे बाप जिन्दा थे और तुमने कह दिया—मर चुके हैं, तुम्हारा इस दुनिया में कोई नहीं।

राजू—मैंने एक बार झूठ बोला था नलिनी और उसको निभाने के लिए मुझे हमेशा झूठ का सहारा लेना पड़ा।

नलिनी—लेकिन तुमने यह झूठ बोला ही क्यों?

राजू—इसलिए कि मेरी जात को नीच समझा जाता है, मैं डरता था कि तुम्हें मुझ से नफरत न हो जाए।

नलिनी—नफरत, उस वक्त शायद नफरत कभी न करती लेकिन आज ज़रूर करती हूँ, क्योंकि तूने अपनी नीचता का सबूत दिया है।

राजू—यह नीचता नहीं, प्यार का अन्धापन था।

नलिनी—ग़लत, प्यार का जाल तो महज़ एक फरेब था। तुम जानते थे मैं ख़ानदान में इकलौती बेटी हूँ। लाखों की ज़ायदाद है। शादी के बाद असलियत खुल भी गई तो कानून तुम्हारी तरफ होगा।

राजू—नहीं, मैंने हमेशा तुम्हें चाहा है, तुम्हारे पैसे को नहीं।

नलिनी—बार-बार प्यार का नाम न लाओ ज़बान पर। जिन

से प्यार किया जाता है उन्हें धोखे में नहीं रखा जाता।

राजू—मैं कसूरवार हूँ नलिनी लेकिन बदनीयत नहीं।

नलिनी—मैं अब जज़बात से नहीं दलील से बातें करने आई हूँ।

राजू—प्यार जज़बात से होता है नलिनी दलील से नहीं और इसके सिवा मेरा और तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं।

नलिनी—तो वह सम्बन्ध अब हमेशा के लिये टूट गया समझो।

राजू—इसलिए कि मेरी ज़ात तुम्हारी ज़ात से बहुत छोटी निकली।

नलिनी—बिल्कुल भी और आज मुझे इस बात का, यकीन हो गया है कि छोटी जात सिर्फ छोटी ही नहीं बल्कि नीच भी होती है। रगों का खून छुपता नहीं बोलता है, तुम्हारे खून में नीचता न होती तो झूठ न बोलते, फरेब न करते छल और कपट की आड़ न लेते।

राजू—बस, कि कुछ और भी कहना है तुम्हें।

नलिदी—कुछ नहीं, अपना सामान जब भी चाहो मंगवा सकते हो।

[नलनी बाहर जाने लगती है, मस्तू आकर रोक देता है।]

मस्तराम—रुक जाओ मेम साहब। यह खून और नीचता का ताना अपने साथ वपिस लेती जाओ।

राजू—रास्ता छोड़ दो मस्तू।

मस्तराम—तुम खामोश रहो भैया, तुम अपनी वकालत कर चुके। अब एक जाहिल और गंवार आदमी को दलील की बात कह लेने दो।

नलिनी—कौन हो तुम ?

मस्तराम—राजू का जात भाई, नीच और अधम।

नलिनी—क्या कहना है तुम्हें ?

मस्तराम—यही कि नीचता खून में नहीं होती, कर्म में होती है, वातावरण में होती है।

नलिनी—मेरे पास इस बहस के लिए फुर्सत नहीं है।

मस्तराम—आपको फुर्सत निकालनी होगी मेम साहब, मेरी जिन्दगी इस बात का सबूत है। मैं जन्म से ब्राह्मण हूँ और कर्म से चमार।

राजू—मस्तू।

मस्तराम—मैं झूठ नहीं कह रहा भैय्या। यह लो मेरा शास्त्र और आप पढ़ो इसके पहले पन्ने को ! जन्म देने वाला है पण्डित प्रेम स्वरूप शास्त्री और जीवन वाला रूलिया राम चमार।

नलिनी—क्या कहा, प्रेम स्वरूप शास्त्री ?

मस्तू—जी हाँ।

राजू—तुम उन्हें जानते हो मस्तू।

मस्तू—क्यों नहीं ! सुना है हाई कोर्ट के जज थे। दुनियाँ के लिए कानून की हिफाजत करते थे। औलाद के लिए कानून का गला घोंट दिया।

नलिनी—झूठ, सरासर झूठ, प्रेम स्वरूप शास्त्री मेरे चचा है। उनकी पत्नी को मरे आज दस साल हो गये हैं। उनकी कोई औलाद ही नहीं।

राजू—रुलिया काका ने उनकी कोई निशानी बताई थी क्या ?

मस्तराम—हाँ, उनके दाएं गाल पर एक तिल है।

नलिनी—यह एक चाल है, शास्त्री जी को ब्लैकमेल करने की एक साज़िश है।

मस्तराम—गुस्सा नहीं खाओ मेम साहिब। मैं आपको बहिन नहीं कहूँगा। कहीं आपके बढ़िया खून को धब्बा न लग जाए। लेकिन यह सच है। मेरी माँ की शादी नहीं हुई, शादी का फरेब दिया गया था। मुझे मौत के घाट उतारने के लिए रुलियाराम को पाँच सौ रुपये दिए गए थे लेकिन मैं मरा नहीं—ज़िन्दा हूँ—और ज़िन्दा रहूँगा।

नलिनी—अगर यह सच न हुआ तो इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।

[नलिनी का प्रस्थान। रविदास, गंगो और सोनिया का डरे हुये प्रवेश। राजू रविदास के पांव छूता है।]

(यवनिका पतन)

तृतीय अंक

समय—दो दिन के पश्चात्, शाम के पाँच बजे।

दृश्य—अँक एक और दो की भाँति।

[बाहर के दरवाजे से राजू लट्टुआ के साथ अपना सामान नलिनी के घर से लेकर आता दिखाई देता है।]

राजू—लट्टुआराम !

लट्टुआराम—जी सरकार।

राजू—यह लो सात रुपये। छः रुपये आठ आने टैक्सी वाले के और आठ आने तुम्हारे।

लट्टुआराम—नो सर, बख्शीश लेना हराम है।

राजू—यह बख्शीश नहीं पगले, तुम्हारे काम की मजदूरी है।

[बाहर से टैक्सी हार्न की आवाज सुनाई देती है।]

लट्टुआराम—(भागते हुए) अभी आया सरदार जी।

[लट्टुआराम का भागते हुए प्रस्थान, दूसरे द्वार से रविदास का प्रवेश.]

रविदास—आ गए बेटा।

राजू—हाँ, काका।

रविदास—उस लड़की से मुलाकात हुई है क्या ?

राजू—नहीं।

रविदास—सामान लेने कौन गया था ?

राजू—लट्टुआराम।

रविदास—अच्छा। यह सामान लखिया के कमरों में भिजवाए देता हूँ। वहाँ सफाई करवा दी है मैंने।

राजू—आप वे कमरे वापिस कर दो काका, मैं वहां नहीं जाऊँगा।

रविदास—कमरे वापिस कर दूँ ?

राजू—जी हाँ, मैं अव इस घर में रहूँगा।

रविपास—अरे वावरा हो गया है। इस घर में तो मैं जूतों की सिलाई का काम करता हूँ।

राजू—तो क्या हुआ। जूतों की सिलाई करना कोई पाप है। सिलाई करने वाले इन्सान इन्सान नहीं होते। उनका घर घर नहीं होता।

रविदाश—वह तो ठीक है लेकिन जो लोग तुझ से मिलने आएंगे, वे क्या कहेंगे, कहां वैठेंगे वे ?

राजू—जिनको मुझसे मिलना होगा वे इसी घर में आएंगे और यहीं वैठेंगे।

रविदास—नहीं, नहीं, तू दुनिया वालों को नहीं जानता, वे वे तेरी हँसी उड़ाएंगे।

राजू—हँसी, मैं इस हँसी के भूत से वहुत डर चुका हूँ काका। मैंने कालिज में अपनी जात नहीं वताई इस डर से कि मेरे दोस्त मेरे साथ खाना-पीना न छोड़ दें। मैंने इम्ति-हानों में अव्वल रहकर नौकरी हासिल की ताकि लोग

हरिजन होने का ताना न दें। मैंने मुहब्बत में शराफत का दामन न छोड़ा इसलिए कि मेरी नियत पे धब्बा न लग जाए। लेकिन आज—आज मुझें सिर्फ इसलिए ठुकराया गया है कि मेरा बाप जूतों की सिलाई का काम करता है। उसका खून घटिया समझा गया है क्योंकि वह दस नाखून की कमाई खाता है।

रविदास—नहीं बेटा, न कोई खून घटिया होता है न बढ़िया, यह सब ताकतवरों का बनाया हुआ एक ढकोसला है।

राजू—लेकिन ऐसा क्यों है ? मैं पूछता हूँ ऐसा क्यों है ? दुकान पर बैठकर जूते बेचने वालों का खून बढ़िया है लेकिन दिन-रात मेहनत करके जूते बनाने वालों का खून घटिया है। चोर बाजार में लोहा बेचने वालों का खून बढ़िया है लेकिन लोहे के साथ लोहा होकर काम करने वालों का खून छटिया है। क्या हम इन्सान नहीं हैं ? हमारा मजहब हिन्दू नहीं हैं ?

रविदास—क्यों नहीं। हम इन्सान भी हैं और हिन्दू भी।

राजू—तो फिर हम से नफ़रत क्यों। कौन से वेद में लिखा है इन्सान जन्म से छोटा या बड़ा होता है। कौन से शास्त्र में लिखा है कि खून के एक से अधिक रंग होते हैं ?

रविदास—लिखा कहीं नहीं सिरफ समाज ने ऐसा हमें समझाया है।

राजू—तो क्यों न आग लगा दी जाए ऐसे समाज को जो इन्सान को इन्सान नहीं, पशु समझता है।

रविदास—क्रोध न करो बेटा, क्रोध करने से खून जलता है।

हासिल कुछ नहीं होता। हिम्मत न हार। जो दुख मैंने देखे हैं वह तू नहीं देख रहा और आज जो कुछ तू देख रहा है वह तेरी औलाद नहीं देखेगी।

राजू—औलाद, जिन्हें इन्सान कहलाने का हक ही न हो, इन्हें औलाद पैदा करने का हक भी नहीं होना चाहिए। अब मुझे शादी से कोई दिलचस्पी नहीं रही काका।

[बाहर के दरवाजे से सुखलाल की आवाज़ सुनाई देती है।]

सुखलाल—चौधरी रविदास घर पे हो क्या।

रविदास—चले आओ।

[सुखलाल का प्रवेश…]

सुखलाल—आए तो हैं भैया, पर अन्दर बुलाने से पहले मैजिस्ट्रेट साहब से पूछ ले, कहीं हमें नीच समझ कर घर से बाहर निकल जाने का हुक्म न सुना दे।

राजू—मैं कहता हूँ सुखलाल………

रविदास—राज़ू, तुम बाहर चले जाओ बेटे।

राजू—लेकिन काका।

रविदास—इस वक्त नहीं।

[राजू खामोशी से पिछले दरवाजे से बाहर चला जाता है।]

सुखलाल—गुस्सा बहुत है तेरे साहब बहादुर में।

रविदास—क्यों ज़ख्मों पे नमक छिड़कते हो सुखलाल।

सुखवाल—अरे, पर मैंने ज़ख्मी तो नहीं किया, मैंने तो भाई-वन्दी का हाथ बढ़ाया था, तुमने घमण्ड में आकर ठुकरा दिया लेकिन बड़ी ज़ात वालों के एक ही थप्पड़ ने अक्ल ठिकाने कर दी।

रविदास—अगर यह थप्पड़ है चौधरी तो यह हमारे मुंह पर नहीं, सारी हिन्दू जाति के मुंह पर है।

सुखलाल—आहा हा, रस्सी जल गई पर बल नहीं गया। तुम्हारे लौंडे ने पासा तो बड़े ज़ोर का फेंका था पर सीधा नहीं पड़ा। जाल में फंसी हुई सोने की चिड़िया फुर्र से उड़ गई।

रविदास—तू क्या समझता है कि राजू उससे जायदाद की खातिर व्याह करना चाहता था।

सुखलाल—मैं क्या, अब तो सारी बिरादरी भांप गई है तुम्हारी चाल को।

रविदास—चाल को, इसमें भला चाल की क्या बात थी।

सुखलान—बात क्यों नहीं, एक तरफ लाखों की जायदाद हड़प कर जाते और दूसरी तरफ बड़ी जात वालों के नातेदार बन कर बिरादरी के नेता बन बैठते।

रविदास—उसमें बिरादरी का क्या नुकसान हो जाता।

सुखलाल—नुकसान, सारी बिरादरी के नाम पर कलंक लग जाता, हम लोग कहीं मुंह दिखाने के न रहते। हमारी जात के आदमी ने धोखा देकर लड़की फांस ली। हमारे लिए मरने की बात हो जाती।

रविदास—लेकिन अब तो खुश हो बिरादरी के नाम को बट्टा नहीं लगा।

सुखलाल—खुशी ना-खुशी तो पंचों की है जिन्होंने कल रात मिलकर अपना फैसला दे दिया है।

रविदास—क्या फैसला दे दिया है।

सुखलाल—तुम्हारा हुक्का-पानी बन्द।

रविदास—मेरा कसूर ?

सुखलाल—तुम्हारे बेटे ने प्रेम स्वरूप शास्त्री की इज़्ज़त पे हाथ डाला है। वह शास्त्री जी, जो हर साल हज़ारों रुपये हरिजनों के उपकार के लिए देते हैं, जो हमारे अधिकारों के लिए सरकार में आवाज़ उठाते हैं।

रविदास—यह फैसला तुम्हारा है या पंचायत का।

सुखलाल—हम दोनों का, मेरा फैसला पंचायत का होता है और पंचायत का फैसला मेरा।

रविदास—तो कान खोलकर सुन लो। मैं भी किसी का दिया नहीं खाता। अपनी गुज़ार लूँगा। तुम अपने फैसले पे कायम रहो और पंचायत अपने फैसले पे।

सुखलाल—एक बात और भी है।

रविदास—मैं जानता हूँ, तुम कहने का कष्ट न करो, ले जाओ अपनी किश्त।

सुखलाल—अब मुझे किश्त नहीं चाहिए, सारा पैसा यकमुश्त चाहिए।

रविदास—यकमुश्त देने की हिम्मत नहीं है मेरे पास।

सुखलाल—हिम्मत नहीं तो मकान खाली कर दो भैया। पंचायत का हुकम है कि अब तुम यहाँ नहीं रहोगे।

रविदास—इस बात का फैसला अदालत करेगी।

सुखलाल—अरे हाँ, अदालत भी अपना फैसला दे चुकी। यह रहा कुर्कीनामा।

रविदास—तेरे पास चार पैसे हैं सुखलाल इसलिए तू खुद को खुदा समझ बैठा है। तेरा मकान आज रात से पहले-पहले

खाली कर दिया जाएगा।

सुखलाल—बड़ी महरवानी होगी, मगर हाँ, लखिया के कमरों में जाने की तकलीफ न करना, वह जायदाद भी मैंने खरीद ली है, अपने लिए नहीं पंचायत के लिए।

रविदास—वस, और कुछ कहना है तो वह भी कह ले।

सुखलाल—सुनना चाहता है तो ज़रूर सुन ले, वाप-बेटा सीधे रास्ते पे आ जाओ, नाता तय हो जाए, दस हज़ार नकद और दो मकान दे दूँगा। वोलो, मंज़ूर है।

[रविदास खामोशी से एक तरफ थूक देता है।]

सुखलाल—(जल-भुनकर) वहुत अच्छा।

[सुखलाल का प्रस्थान, वाहर के दरवाज़े से गंगो का प्रवेश जिसे देख कर सुखलाल और भी जल उठता है···]

गंगो—यह सुखलाल क्यों आया था यहां ? क्यों आया था ?

रविदास—हमें घर से वेघर करने।

गंगो—क्यों, यह क्या कह गया है कलमुँहा।

रविदास—हमारे घर की कुर्की ले ली है उसने।

गंगो—इतना जुल्म, सिर्फ इसलिए कि हमने उसकी वेटी का नाता मोड़ दिया है।

रविदास—पैसे वाले हैं गंगो, जो चाहें कर सकते हैं। अव भी लालच दे रहा था, दस हज़ार और दो मकान।

गंगो—तो फिर क्या जवाव दिया तुमने ?

रविदास—मैंने, मैंने रात से पहले घर छोड़ना मंजूर कर लिया है।

गंगो—वहुत अच्छा किया तुमने। यही सोच लें

तालीम दी थी बेटे को। भाड़े के कमरे तो कहीं नहीं गए।

रविदास—लेकिन गंगो, अब वो भाड़े के कमरे भी नहीं रहे, हमें नीचा दिखाने के लिए उसने लखिया की जायदाद भी खरीद ली है।

गंगो—कोई बात नहीं, सारे संसार की धरती तो नहीं खरीद लेगा। अपना झोंपड़ा तो मौजूद है गाँव में, वहीं काट लेंगे जिन्दगी के दिन, पर पैसे के सामने माथा नहीं रगड़ेंगे।

रविदास—लेकिन सोनिया का क्या होगा।

गंगो—जहाँ राजू रहेगा वहीं सोनिया रहेगी। अभी लगन पढ़वाए देती हूँ। दस रोज़ के लिए तो मेरा भैया ही घर दे देगा।

रविदास—यही बात राजू मान जाए तो सारी चिन्ता ही न मिट जाए।

गंगो—अब क्या उज़र है उसको, अब तो देख ली उसने शादी से पहले की लुगाई। बेइज़्ज़ती करके चली गई चौड़े में। शादी करके घर आई होती तो घर वाले की इज्ज़त पर जान लुटा देती।

रविदास—वह तो किस्मत का फेर पड़ गया वरना।

गंगो—किस्मत का फेर नहीं, फेर है तुम मर्दों की बुद्धि का। जो औरत नौकर बनकर तुम्हारी गुलामी करे उसे ठोकर मार दो और जो नटनी बनकर नाच नचा दे उसके तलवे चाटो।

रविदास—यह बात नहीं गंगो, वह नाता हो जाता तो तकदीर खुल जाती हम लोगों की।

गंगो—क्या मिल जाता, पैसा, जायदाद; ये चीजें तो गुरु महाराज भी लिए बैठा है हथेली पर। इन्हीं से क्यों नहीं ले लेते? पैसा तो सब जात वालों का एक-सा होता है। कान खोलकर सुन लो, पहले सोनिया की शादी होगी रामू से, फिर कदम निकलूंगी इस घर की चौखट से।

[सोनिया का बाहर के दरवाजे से घबराए हुए प्रवेश.]

सोनिया—काका, काका!

रविदास—क्या हुआ सोनिया!

सोनिया—हमारे खिलाफ पंचायत बैठ गई है चौपाल पर।

रविदास—बैठने दे, मुझे क्या डर मारा जा रहा है।

सोनिया—बुआ, सुना है हमको यहाँ से निकालने की बात कर रहे हैं, रामू काका ने बुलवाया भी है आपको।

रविदास—मैं नहीं जाऊँगा, जो उनके जी में आए कर लें।

गंगो—जाओगे क्यों नहीं? हमने कोई चोरी की है, बेईमानी की है जो उनके सामने न जाएं। चलो, मैं भी चलती हूँ तुम्हारे साथ।

रविदास—अगर जाना ही है तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा, तू गुरु जी से बात कर ले। तू मेरा अँगोछा उठा दे बेटी, रामू घर आये तो उसे यहीं रोक लेना। कुर्की के बारे में कुछ न कहना। कहीं गुस्से में आकर पंचायतघर न चला जाए।

[रविदास का बाहर को प्रस्थान, दूसरे दरवाजे से ·· मस्तू का प्रवेश; मस्तू शराब के नशे में ·]

मस्तू—मैं बिल्कुल होश में हूँ भैया।

राजू—हां, हां, तू बिल्कुल होश में है, मगर आगे तो चल।

मस्तू—आगे, आगे किधर है ?

राजू—इधर।

[मस्तू आगे बढ़ता है, सोनिया को देखकर ठिठक जाता है।]

बैठो। आज फिर बोतल ली ही तू ने।

मस्तू—बोतल नहीं पी भैया, सिर्फ अद्धा पिया है, तुम्हारी कसम यह रहा खाली अद्धा।

राजू—तुझे याद है कल तू ने क्या वायदा किया था ? फिर कभी शराब नहीं पीऊँगा।

मस्तू—याद है, मेरी याददाश्त बड़ी पक्की है, बचपन से लेकर अब तक सब कुछ याद है।

राजू—फिर तू ने शराब क्यों पी ?

मस्तू—मेरे पिता जी ने आज्ञा दी, मैंने पी ली।

राजू—पिता जी ने आज्ञा दी ? क्या बकवास कर रहा है।

मस्तू—बकवास नहीं सच कह रहा हूँ। मेरे पिता ने सन्देशा भेजा है 'शराब पियो बेटा और झूठ बोलो'। हां, और उसके लिए सौ-सौ के पच्चास पत्ते भी दिए हैं, ये रहे।

राजू—पांच हज़ार रुपया, यह कहाँ से लाया है तू ?

मस्तू—लाया नहीं, यह खुद ही चला आया है।

राजू—यह किसने दिया है तुम्हें ?

मस्तू—मेरे पिता जी के मुनीम ने, और कहा है 'शराब पियो...'

राजू—क्या कहा है ?

मस्तू—मैं तुम्हारी नल वाली से कह दूं कि वह मेरी बहिन नहीं है मैंने वह बात शराब के नशे में कह दी थी।

राजू—इसलिए तू ने शराब पी ली है ?

मस्तू—हां, यह देखने के लिए कि शराब के नशे में सच्च झूठ नज़र आता है क्या।

राजू—तो फिर क्या नज़र आया है तुझे ?

मस्तू—वही, सच्च सच्च है और झूठ झूठ।

राजू—शाबास मस्तू, सच सच है और झूठ झूठ। यह पैसे लौटा दो।

मस्तू—इसलिए तो आ रहा था तुम्हारे पास, एक चिट्ठी लिख दो मुझे। लिख दो एक चिट्ठी।

राजू—लेकिन पैसे लेकर कौन जाएगा ?

मस्तू—वह अपना मुनीम है न, श्रीयुत लट्टुआराम। यह लो कागज और पैंसिल।

राजू—क्या लिखूँ।

मस्तू—साहूकार शास्त्री जी। पांच हजार की रोकड़ मिली। आपकी आज्ञानुसार पूरी बोतल चढ़ा ली; इन रंग-बिरंगे नोटों को हज़म करने का पूरा यत्न किया पर निगल नहीं सका।

राजू—क्यों ?

मस्तू—इन कागज के चीथड़ों में झूठ और कपट की घिन आती है। साहूकार जी, पैंसे से जिसम मिलते है आतमा नहीं, सो सौदा फिसक समझो—साहूकार मस्तराम।

राजू—कोई लिफाफा है तेरे पास ?

मस्तू—नहीं, अभी ले आता हूँ।

राजू—तुम मत जाओ, मैं ले आता हूँ। यह रुपये सम्भालो।

[राजू का पीछे के दरवाजे से प्रस्थान; अन्दर के दरवाजे से सोनिया का प्रवेश।]

सोनिया—मस्तू, मस्तू।

मस्तू—हुं।

सोनिया—मुँह क्यों फेर लिया मस्तू। आज मैं तुझे अच्छी नहीं लगी।

मस्तू—तू तो हमेशा अच्छी लगती है। नफरत तो मुझ से तू करती है।

सोनिया—मैं तुम से नफरत नहीं करती मस्तू, बात यह है कि मेरा दिल— ।

मस्तू—हां, हां, तेरा दिल नफरत करता है मुझ से तू नहीं करती। मेरा दिल राजू से नफरत करता है, मैं नहीं करता, राजू का दिल तुझसे नफरत करता है राजू नहीं करता। सब नफरत करते हैं, सब प्यार करते हैं।

सोनिया—तुमने एक बार कहा था कि मैं कहूँ तो कुएँ में छलाँग लगा देगा।

मस्तू—तू ने कभी कहा ही नहीं।

सोनिया—आज कह रही हूँ, ना तो नहीं करेगा।

मस्तू—कभी नहीं। (उठकर कुएँ की तरफ जाता है।)

सोनिया—मस्तू, यह पाँच हज़ार रुपये मुझे दे दो।

मस्तू—ये रुपये, मेरी ईमान की कीमत हैं सोनिया।

सोनिया—मैं जानती हूँ।

मस्तू—इन पर मेरा कोई हक़ नहीं।

सोनिया—तो मैं इनकार समझ लूँ।

मस्तू—सोनिया मैं—।

सोनिया—अपने प्यार के लिए ईमान नहीं बेच सकता।

मस्तू—बहुत बड़ी कीमत माँग रहो हो।

सोनिया—मैं तेरा ईमान खरीदकर अपना प्यार बेच दूँगी, शादी कर लूँगी तुम्हारे साथ।

मस्तू—तुम, तुम शादी कर लोगी मुझ से।

सोनिया—मैं राम जी की सौगन्ध खाती हूँ।

मस्तू—तो ले, ले ले, मैंने अपना ईमान बेच दिया, लेकिन मैं तेरा प्यार खरीदूँगा नहीं, नहीं खरीदूँगा सोनिया।

[नलिनी का प्रवेश। सोनिया का घर के अन्दर प्रस्थान.]

नलिनी—भैया।

मस्तू—भैया, आपने मुझे भैया कहा मेमसाहब।

नलिनी—मेमसाहब नहीं, मैं तुम्हारी बहिन हूँ, नलिनी।

मस्तू—मेरी बहिन !

नलिनी—हाँ भैया, उस दिन जो कुछ तुमने कहा था वह सच है, मेरा घमण्ड झूठा निकला।

मस्तू—उस दिन, उस दिन की बात सब झूठ है, वह बात मैंने नशे में कह दी थी। मैं शराब पीता हूँ न ? इसलिए बहक जाता हूँ। मेरा शास्त्री जी से कोई रिश्ता नहीं, कोई रिश्ता नहीं।

[मस्तू का तेजी से बाहर को प्रस्थान। सोनिया का अन्दर के दरवाजे से प्रवेश।]

सोनिया—क्या कहना है आपको, मुझसे कहिए।

नलिनी—तुम राजू की बहिन हो क्या ?

सोनिया—आपको इससे मतलब ।

नलिनी—मैं राजू से मिलना चाहती हूँ ।

सोनिया—क्यों ।

नलिनी—उनसे माफी माँगने के लिए ।

सोनिया—माफी किस बात की ।

नलिनी—अपने अभिमान भरे शब्दों की, जो उस दिन मेरे मुँह से निकल गए थे ।

सोनिया—अभिमान तो आप लोगों का पैदाइशी हक है, आप उसे तोड़ना क्यों चाहती हैं ।

नलिनी—अपनी आत्मा की शान्ति के लिए ।

सोनिया—आपकी आत्मा अशान्त है, क्यों ?

नलिनी—मैंने अपने आप को धोखा दिया है, अपने प्यार का गला घोटा है ।

सोनिया—झूठ, तुमने उन्हें प्यार किया ही नहीं ।

नलिनी—मैं अब भी उन्हें प्यार करती हूँ ।

सोनिया—जिन्हें प्यार किया जाता है उन्हें जलील नहीं करते । नीचता का ताना नहीं देते । प्यार करने से पहले जात क्यों न पूछ ली तुम ने । खून की परख क्यों न करवाली तुमने ?

नलिनी—मैं अपने घमण्ड पर बहुत शर्मिन्दा हूँ । और दरअसल यह मेरा घमण्ड भी नहीं था मेरे दिल का चोर था ।

सोनिया—चोर, चोर कैसा ?

नलिनी—जो हर बड़ी जात वाले के अन्दर छुपा कर छोटी जात

से मिलने नहीं देता। मैं उसी चोर से डर गई थी।

सोनिया—वह डर अब कैसे दूर हो गया ?

नलिनी—मस्तू भैया के भेद ने सब भ्रम तोड़ दिये हैं।

सोनिया—तो मस्तू के पिता उसे बेटा मान लेंगे ?

नलिनी—नहीं, वे अब भी अपनी आन तोड़ने को तैयार नहीं।

सोनिया—तुम्हारी शादी के लिए भी तैयार नहीं।

नलिनी—वह जात-पात के बन्धनों में जकड़े पड़े हैं।

सोनिया—और आप ?

नलिनी—मैं वे सब ज़ंजीरें तोड़ कर चली आई हूँ।

सोनिया—तो क्या आप अपना घर छोड़कर चली आई हैं ?

नलिनी—इसके सिवाय कोई चारा ही न था।

सोनिया—आप सचमुच बहुत प्यार करती हैं उनसे ?

नलिनी—तुम राजू की बहिन हो न।

सोनिया—हाँ, मेरा नाम सोनिया है; राजू भैया बहुत खुश होंगे तुम्हें पाकर।

नलिनी—तुम्हारा नाम बहुत प्यारा है।

सोनिया—मैं अभी बुलाकर लाती हूँ भैया को।

[सोनिया का प्रस्थान]

[राजू का प्रवेश]

राजू—मस्तू ने जो कुछ कहा वह झूठ है, बिल्कुल झूठ है।

नलिनी—मैं जानती हूँ।

राजू—मेरे पास इसका सबूत है, यह रही उसकी चिट्ठी।

नलिनी—मैं सबूत मांगने नहीं आई।

राजू—क्यों, कोई और तरीका मिल गया है मुझे जलील करने का।

नलिनी—मेरी माँ ने मुझे सारी कहानी सुना दी है, वह सब कुछ सच है।

राजू—लेकिन अब वह खुद इस बात से इन्कार कर रहा है।

नलिनी—मैं उसका कारण भी जानती हूँ।

राजू—शास्त्री जी ने उसे पाँच हज़ार का लालच दिया है।

नलिनी—अपने गुनाह को छुपाने के लिए।

राजू—और वह लालच में आकर अपना ईमान बेचने को तैयार हो गया है।

नलिनी—मैं ऐसा नहीं कहूँगी, शायद बेचारे की कोई मजबूरी है।

राजू—मजबूरी, तो आपको भी मजबूरियों का एहसास होने लगा है ?

नलिनी—मुझे बार-बार आप न कहो। मैं पहले ही बहुत परेशान हूँ राजू, आज मुझे बैठने के लिए भी नहीं कहोगे ?

राजू—माफी चाहता हूँ। छोटेपन का अहसास तहजीब के असूल भी भुला देता है।

नलिनी—मैं अपनी भूल को मानती हूँ। बड़ाई और नीचता जन्म से नहीं, कर्म से होती है।

राजू—यह बात तो तुम उस दिन भी जानती थी, जब समाज का उपदेश सुनाया जा रहा था।

नलिनी—यह मेरी बुजदिली है।

राजू—और यही बुज़दिली आप लोगों के अन्दर घमण्ड का रूप धारण कर लेती है।

नलिनी—मैं मानती हूँ। लेकिन यही बुज़दिली तुम्हारे अन्दर भी बसी है। घबराहट के रूप में। कालिज में अपनी जात बताने की हिम्मत क्यों न हुई तुम में, तुम ने फखर से क्यों न कहा कि मैं एक चमार का बेटा हूँ।

राजू—उसकी ज़िम्मेदार तुम हो, बड़ी जात वाले हैं, जिनके दिलों में हमारे खिलाफ नफरत भरी है। तुम्हारे कायदे और कानून हैं जो हमें पनपने का मौका ही नहीं देते।

नलिनी—मेरी जात वाले ज़रूर हैं, लेकिन कानून नहीं राज, कानून तुम्हें बराबरी का हक दे चुका है।

राजू—बराबरी, इन्सान की बराबरी कानून में नहीं होती, रोटी और बेटी में होती है। मैं हाकिम बनकर अपने मातहतों को हुक्म दे सकता हूँ, उनके साथ बैठकर रोटी नहीं खा सकता, मैं बड़ी जात वालों का राष्ट्रपति बन सकता हूं लेकिन इज़्ज़त से उनका नातेदार नहीं बन सकता।

नलिनी—मैं उस बराबरी के लिए तैयार होकर आई हूँ राज।

राजू—तो तुम अपने नातेदारों को छोड़कर चली आई हो।

नलिनी—और सारी जायदाद भी।

राजू—लेकिन, लेकिन ब्याह की बुनियाद दो घरों का प्यार होता है नलिनी, बैर और तकरार नहीं।

नलिनी—काश! ऐसा हो सकता।

राजू—शास्त्री जी ने क्या कहा है।

गंगो—नहीं, नहीं, यह कभी नहीं हो सकता।

सुखलाल—मैं ऐसा करके साँस लूँगा बुढ़िया।

गंगो—कमीने, नीच, हत्यारे, जा, तेरा किसी भी जन्म में भला न हो। गरीब की आह खा जाएगी तुझे। दुखियों का सराप कभी खाली नहीं जाता। हाय, हाय, हाय।

राजू—अम्मां।

[गंगो बेसुध होकर गिर पड़ती है, राजू घबराहट में संभालता है।]

सुखलाल—अरे तुम लोग बाहर खड़े मुँह क्या देख रहे हो।

[सोनिया का तेज़ी से प्रवेश ! बुआ को बेसुध देखकर जोश में आ जाती है…]

सोनिया—इस घर से निकल जाओ सुखलाल।

सुखलाल—तो निकाल दे हमारे पैसे, हम चले जाते हैं।

सोनिया—पैसे के कुत्ते। ये रहे पाँच हज़ार, वैलिफ से कहो रसीद काट दे।

राजू—सोनिया।

सुखलाल—यह रुपया कहाँ से लिया है तूने।

सोनिया—तू कौन है पूछने वाला।

सुखलाल—मैं बिरादरी का पँच हूँ। यह रुपया चोरी किया गया है।

सोनिया—मैं कहती हूँ निकल जा इस घर से नहीं तो गोली मार दूंगी।

सुखलाल—(भागते हुए प्रस्थान) चोर, चोर, चोर, बचाओ बचाओ।

[सोनिया रोती हुई बुआ पर गिर जाती है]

राजू—सोनिया, पागल हो गई है क्या।

[राजू और सोनिया का गंगो को सहारा देकर भीतर की आर

[प्रस्थान]

[दूर बहुत से आदमियों का शोर सुनाई देता है···]

आवाज़ें—सनातन-धर्म, अमर रहे। वैदिक-धर्म, अमर रहे···

[रविदास का घबराये हुए प्रवेश···]

रविदास—गज़ब हो गया बेटा, बड़ी जात के सैकड़ों आदमी आ गए हैं बस्ती में। बहुत बड़ी मुसीबत आती दिखाई दे रही है।

[सोनिया भागकर दरवाज़े के बाहर देखती है···]

सोनिया—वे लोग तो इधर ही चले आ रहे हैं भैया, सुखलाल भी उन्हीं के साथ है।

राजू—घबराओ नहीं काका, हमने कोई गुनाह नहीं किया।

रविदास—मेरा कहना मान ले राजू, फौरन बस्ती के बाहर चला जा। वे लोग गुस्से से दीवाने हो रहे हैं, न जाने क्या कर बैठें। सोनिया, तू जल्दी से किवाड़ बन्द कर दे बेटी।

राजू—नहीं सोनिया, किवाड़ खुले रहने दे, तू भाग कर अन्दर चली जा। आज हमारे इम्तिहान का वक्त आ गया है काका। मैं पीठ नहीं दिखाऊंगा।

रविदास—राजू, तुम्हें मेरी कसम, घर से बाहर कदम नहीं रखना।

[शोर बिल्कुल समीप आ जाता है, दरवाज़े के बाहर लोगों के नारे सुनाई देते हैं।···]

आवाज़ें—सनातन-धर्म, अमर रहे। शास्त्र के विरुद्ध, शादी नहीं होगी···

[सुखलाल और पण्डित हीरानन्द का प्रवेश]

सुखलाल—आइए पण्डित जी, ये खड़े हैं वे कपटी और धोखे-बाज़ इन्सान।

आवाज़ें—इनको घसीटकर बाहर ले आओ, बाहर ले आओ इन्हें।

हीरानंद—खामोश ! आप सब लोग यहीं ठहरें, मैं बात करता हूं इनसे। सिर्फ चार सज्जन अन्दर आ जाएं।

[चार आदमी लाठियां उठाए अन्दर आते हैं]

हीरानंद—वह लड़की हमारे हवाले कीजिए।

राजू—कौन-सी लड़की ?

हीरानंद—शास्त्री जी की भतीजी, नलिनी। जो तुम्हारे बहकावे में आकर शास्त्र के विरुद्ध शादी करने चली आई है।

रविदास—वह देवी आज यहां नहीं आई महाराज।

आवाज़ें—आई थी ! आई थी।

राजू—आई ज़रूर थी काका लेकिन अभी-अभी वापिस चली गई।

सुखलाल—झूठ, इन दोनों की चालाकी देखी पण्डित जी वह यहां आई थी लेकिन वापिस नहीं गई।

हीरानंद—अगर आप लोगों ने उसे अन्दर छिपा रखा है तो इसका नतीजा बहुत बुरा होगा।

राजू—आप लोग घर की तलाशी लेकर अपना शक दूर कर सकते हैं।

सुखलाल—अगर वह यहाँ नहीं तो तुम लोगों ने उसे कहीं और छुपा दिया होगा। (हीरानन्द से) इसी अपराध के लिए हमने इन्हें कल बिरादरी से अलग कर दिया था लेकिन ये लोग अपनी चालों से बाज़ नहीं आए। अपनी बिरादरी की तरफ़ से मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह शादी नहीं होगी, मैं यह अनर्थ नहीं होने दूँगा।

हीरानन्द—हम इन लोगों से लिखत में वायदा चाहते हैं कि चोरी-छुपे, किसी भी वक्त, शास्त्र के विरुद्ध यह शादी नहीं होगी।

आवाज़ें—यह शादी नहीं होगी……।

सुखलाल—आपने ठीक कहा, इन दोनों से अभी लिखवा लिया जाए, वरना इनका कोई भरोसा नहीं।

[हारानन्द और चारों आदमी बढ़कर रविदास को घेर लेते हैं, कागज़ और कलम पेश करते हैं।]

राजू—कानून को अपने हाथ में लेने का आप लोगों को कोई अधिकार नहीं।

हीरानन्द—बहस मत करो जी, वरना सारी भीड़ बेकाबू हो जायगी।

एक आदमी—इस घर को आग लगा दी जाएगी।

दूसरा आदमी—जलाकर राख का ढेर कर दिया जायगा।

आवाज़ें—हां हां जला दिया जायेगा। सनातन धर्म, अमर रहे, वैदिक धर्म, अमर रहे।

[पुलिस इन्स्पैक्टर का तेज़ी से दूसरे दरवाज़े से प्रवेश।]

इन्स्पैक्टर—यह क्या हुल्लड़ मचा रखा है आप लोगों ने।

(हीरानन्द से) मेहरवानी करके आप इस घर से वाहर चले जाइए। नहीं तो इसे वलवा करार देकर मुझे कानूनी कारवाई करनी पड़ेगी।

हीरानन्द—(इन्स्पैक्टर के सामने नारे लगाकर) सनातन धर्म, अमर रहे। यह शादी नहीं होगी। हम लड़की को साथ लिए विना इस घर से जाने के लिए हरगिज तैयार नहीं।

आवाज़ें—हरगिज़ तैयार नहीं......

इन्स्पैक्टर—लेकिन वह लड़की तो अपने घर जा चुकी है, मैं पूछताछ करके आया हूँ।

हीरानन्द—क्या सबूत है इस वात का ?

इन्स्पैक्टर—सवूत, शास्त्री जी खुद मेरे साथ आए हैं।

हीरानन्द—कौन से शास्त्री जी ?

इन्स्पैक्टर—जज साहव।

[हीरानन्द आदमियों को एक तरफ होने का इशारा करता है, इन्स्पैक्टर वाहर जाकर प्रेम स्वरूप को ले आता है।]

हीरानन्द—नमस्कार शास्त्री जी।

प्रेमस्वरूप—नमस्कार हीरानन्द, इन सब सज्जनों से कहो, शान्तिपूर्वक यहाँ से चले जाएँ। यह मेरा जाती मामला है और इसे तय करने के लिए मैं खुद आ गया हूँ।

हीरानन्द—आप हमारे नेता हैं शास्त्री जी, इसलिए हम आप से आशा करते हैं कि आप शास्त्रों के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाएंगे।

प्रेमस्वरूप—मैं शास्त्रों को बहुत अच्छी तरह समझता हूँ